शेख़ बाबा फ़रीद

और उनका काव्य

डा॰ जयभगवान गोयल

शेख बाबा फरीद और उनका काव्य

डा० जयभगवान गोयल
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

1988

आत्माराम एण्ड संस
कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

आत्माराम एण्ड संस
कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

शाखा
17, अशोक मार्ग, लखनऊ

ISBN 81-7043-081-X

मूल्य : 35.00 (पैंतीस रुपये)

आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6 द्वारा प्रकाशित / प्रथम संस्करण /
©आत्माराम एण्ड संस / शान प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32 में मुद्रित

Sheikh Baba Farid aur unka Kavya by Jay Bhagwan Goyal

फरीद रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंनि।
जो जो बेझै डीहणा सो उमर हथ पवंनि॥

म०5॥ फरीदा खालकु खलक महि खलक बसै रब माहि।
मंदा किस नों आखीऐ, जां तिसु बिनु कोई नाहि॥

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि ना हढाइ।
देही रोग न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥

आप सवारहि मैं मिलहि मैं मिलिआ सुखु होए।
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ॥

विषय-सूची

- बाबा फ़रीद शकरगंज—व्यक्तित्व परिवेश एवं प्रभाव 9
  - सूफीमत का आविर्भाव एवं विकास 9
  - आध्यात्मिक विचार 15
    - अल्लाह 16
    - मुहम्मद 17
    - फरिश्ते 18
    - पीर-फकीर 18
    - सृष्टि-जगत 20
    - शरीर-मृत्यु 22
    - कर्मफल 27
  - साधना मार्ग 28
  - प्रणयानुभूति 32
  - सदाचरण 35
  - पूर्ण मानव (इन्सानुल कामिल) 36
  - सूफीमत एवं भक्ति-भावना 40
- वाणी—शेख फ़रीद 43

पंजाबी एवं हिन्दी के प्रथम कवि :

सूफी दरवेश बाबा फरीद शकरगंज

भारतवर्ष एक अध्यात्म प्रधान देश है। यहाँ वैदिक काल से ही भक्ति की पावन पयस्विनी प्रवाहमान रही है। दक्षिण में द्रविड़ संस्कृति में परि-पोषित भक्ति-परम्परा विकसित हो रही थी। ईसा के कई सौ वर्ष पूर्व यह भावना काफी दृढ़ हो चुकी थी। दक्षिण के वैष्णव (तिरूमाल) भक्तों की भक्ति-भावना में बड़ी निष्ठा थी। बाद में आलवार भक्त कवियों ने अपनी सरस संगीत-मयी वाणी से इसका खूब प्रचार एवं प्रसार किया और इसे एक जन-आन्दोलन का रूप दे दिया।[1] इन आलवार भक्तों का समय 5वीं से 9वीं शती तक है। उत्तर भारत में भी उपनिषद् आदि से प्रभावित भक्ति-परम्परा विकसित हो रही थी। 'महाभारत' तथा 'गीता' आदि में भी 'भक्ति-भावना' के दर्शन होते हैं। पौराणिक काल में अवतारवादी भावना से भक्ति-भावना को विशेष प्रश्रय मिला। इस प्रकार उत्तर भारत में 7वीं 8वीं शताब्दी तक 'भक्ति-भावना' का यथेष्ठ प्रचार होने लगा था। आगे चलकर संतों एवं भक्त कवियों ने अपनी संगीतमयी वाणी से उत्तर भारत में भी इसे एक आन्दोलन का रूप प्रदान किया।

'भक्ति' का मूलाधार है—"परमात्मा के प्रति अनुराग।" आलवार भक्तों की भक्ति भी प्रीतिमयी है और सूफियों की प्रणयानुभूति से उसकी पर्याप्त समानता है। यही कारण है कि प्रेम-मार्गी सूफियों का जब भारत में आगमन हुआ, तो उनकी प्रेममयी भक्ति-भावना का किसी ने भी विरोध नहीं किया, वरन् उसका स्वागत ही हुआ।

सूफीमत का आविर्भाव एवं विकास

भारत का अरब देशों से सम्पर्क प्राचीन काल से रहा है। इस्लाम के आविर्भाव से भी पूर्व भारत का अरबों से व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध था।

---

1. डॉ. मलिक मुहम्मद, (क) आलवार भक्तों का तामिल प्रबन्धम, पृ० 3-4
डॉ. मलिक मुहम्मद, (ख) वैष्णव भक्ति आन्दोलन का अध्ययन, पृ० 12-17

'इस्लाम से पूर्व बौद्धमत का प्रचार पूर्वी ऐशिया और ट्रैंसोग्जियाना में होने लगा था।[2] "अरब के दक्षिण तथा मेसोपोटामिया में भी भारतीयों का प्रवेश बहुत पहले हो चुका था।[3] "इसलिए अनेक विद्वानों का मत है कि भारतीय अध्यात्मवाद से ये देश प्रभावित रहे हैं।

भारत में भी इस्लाम धर्म का प्रवेश सातवीं-आठवीं शती में ही होने लगा था। "मालावार के समुद्र तट एवं मैलापुर (मद्रास) आदि में भी कुछ इस्लामी धर्मोपदेशक आने लगे थे।[4] "जब बसरा के गवर्नर हज्जाज बिन युसुफ के आदेश से अरवी जेनरल इमामुद्दीन मुहम्मद बिन कासिम सिंध में अपनी फौजों के साथ आ घुसा तो उत्तर भारत में भी इस्लाम का प्रवेश हो गया।"[5] "इस प्रकार आठवीं शताब्दी के पूर्वाध में ही इस्लामी धर्म-प्रचारकों, पीरो-फकीरों आदि का प्रवेश उत्तर भारत में होने लगा था, किन्तु इनका क्षेत्र अभी सिंध या मुलतान आदि तक ही सीमित था। बाद में महमूद गजनवी एवं मुहम्मद गौरी आदि के आक्रमणों के साथ जब मुसलमान आगे बढ़े तो इस्लाम का प्रचार क्षेत्र भी विस्तृत होने लगा।

यद्यपि कुछ सूफी साधक भी आठवीं शती के आरम्भ में ही भारत पहुँच गये थे, किन्तु भारत में सूफीमत के प्रचार का वास्तव में आरम्भ 12वीं शती के प्रथम चरण में प्रसिद्ध सूफी अल-हुज्विरी के लाहौर आगमन से हुआ।"[6] बाद में समशतवरेज, मईनुद्दीन चिश्ती, बहाऊदीन जर्गारिया, बखतिआर काकी, नजामुद्दीन औलिया, बुरहान दाउद, बख्शी फकीरूद्दीन, जिआउदीन वरनी, शेख जमालुद्दीन आदि अनेक सूफी साधकों की प्रेरणा से भारत में इस मत का प्रचार एवं प्रसार हुआ। इनके कई सम्प्रदायों की स्थापना हुई—जिनमें चिश्ती, सुहरावर्दी, नकशबंदी, शत्तारी एवं कादरी सम्प्रदाय प्रमुख थे। लाहौर, दिल्ली एवं अजमेर इनके प्रचार के प्रमुख केन्द्र थे।

इस्लाम के धर्म प्रचारकों में दो तरह के लोग थे। एक तो तलवार के ज़ोर पर बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन करवाने वाले कट्टर मुसलमान धर्म प्रचारक और दूसरे दरवेशी जीवन व्यतीत करने वाले एवं दु:खीजनों के कष्टों को दूर करने की चेष्टा करने वाले साधक जो शरह की पाबंदी की अपेक्षा ईश्वरीय-प्रेम को अधिक महत्त्व देते थे। वस्तुतः, भारत में इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार का अधिक श्रेय इन्हीं सूफी साधकों को है।

---

2. Arabic thought and its place in history p. 190
   (उद्धृत) डा. विमल कुमार जैन, सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 82
3. the Mystics of Islam (Intro), p. 170 (उद्धृत वही)
4. परशुराम चतुर्वेदी, सूफी काव्य संग्रह, पृ० 35
5. वही, पृ 404
6. डॉ. श्याम मनोहर पाण्डेय, मध्ययुगीन प्रेमाख्यान, पृ० 8

सूफ़ीमत का प्रचार और प्रसार फारस, मिश्र और सीरिया में अधिक हुआ।[7] शेख अबू हाशिम (नवीं शती) को प्रथम सूफी माना जाता है। अबू हसन बसरावी, इब्राहीम बिन अधशेख साक़िक आदि इस युग के अन्य सूफ़ी थे। किन्तु, इनमें सबसे प्रसिद्ध थीं राबिया वसराविनी। इस युग के सूफियों की विशेषताएँ थीं—एकान्त-प्रियता, ईश्वर-चिन्तन, ध्यानजनित आनन्द, तौबा (पश्चाताप) एवं तवक्कुल (आत्म-समर्पण)। ये सूफी संन्यास व्रतावलम्बी (ज़ाहिद) थे। इस्लाम का अभी इतना प्रभाव था कि ये सूफी शर्‌ह की पाबंदी से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सके थे। इसीलिए इन्हें 'बा-शरा' सूफी भी कहा जा सकता है। शायद राबिया इसका अपवाद थीं, क्योंकि उन्होंने केवल माधुर्य-भाव से ही ईश्वर की उपासना की। इसी समय इस्लाम में स्वतंत्र चिन्तन की प्रवृत्ति बढ़ी और उस पर भारतीय वेदान्त एवं बौद्ध दर्शन, ईरानी संस्कृति, ईसाइयों के भाव योग, प्लोटिनस के नव अफलातूनी मतवाद आदि का प्रभाव पड़ा। इस्लाम में नितान्त नवीन विचार स्रोतों का प्रवेश हुआ।[8] परिणाम-स्वरूप इस युग के सूफियों मे परम तत्त्व की अनुभूति एवं सांसारिक विषयों से त्याग की विशेषताएँ प्रमुख हैं।[9] उनमें मादन भाव (माधुर्यभाव) एवं भावावेश की प्रवृत्ति अधिक है। मारूफल करर्वी, सुलेमान बारानी, जुलनून निग्री, बायाजीद अलवस्तामी, अल-जुनैद, खोरामानी शिवली आदि इस युग के प्रमुख सूफी थे। सबसे प्रसिद्ध थे जुनैद के शिष्य हुसैन बिन मंसूर, जिन्होंने 'अन-अल-हक' का उद्‌घोष करके सनातनपंथी मुसलमानों के साथ सैद्धान्तिक विरोध प्रकट किया। तत्त्व-चिंतन की दृष्टि से इन्हें 'बे-शरा' सूफी भी कहा जा सकता है, क्योंकि इनमें इस्लाम विरोधी तत्त्व अधिक हैं। जुनैद ने दोनों पक्षों में सामंजस्य लाने की भी चेष्टा की। तीसरे वर्ग में समन्वय की यह प्रवृत्ति ही परिलक्षित होती है। इस्लाम एवं सूफीमत में समन्वय स्थापित करने वाले सूफियों में अल-गज़ाली का सर्वप्रमुख स्थान है। "गज़ाली में तोहीद (एकत्व) एवं तवक्कुल (आत्म-समर्पण) का पूरा गठबंधन दीख पड़ता है और नमाज़ एक सच्चे हृदय का स्वाभाविक कर्त्तव्य बन जाता है।[10] इस प्रकार "सूफीमत को इस्लाम के ही अन्तर्गत मान लिया गया[11]" और इस्लामी धर्म एवं सूफीमत का पार्थक्य दूर हो जाने से दोनोंका प्रचार दोनों के लिए एक साथ आरम्भ हो गया और पारस्परिक विरोध का अवसर सदा के लिए जाता रहा।[12] बाबा फरीद शकरगंज जुनैद एवं अल-गज़ाली

7. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 79
8. सूफी काव्य संग्रह, पृ० 10
9. वही, पृ० 10
10. सूफी काव्य संग्रह, पृ० 15-16
11. शेख फरीद चिंतन तं कला, पृ० 82-83 (जी. एन. शर्मा)
12. सूफी काव्य संग्रह, पृ० 230

की परम्परा के समन्वयवादी सूफी कवि हैं। मंसूर और राबिया की परम्परा के नहीं। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने इस्लाम एवं सूफीमत के सिद्धान्तों का ही समन्वय नहीं किया, वरन् भारतीय परिवेश में रहते हुए उसके सामयिक एवं परम्परागत प्रभाव को भी आत्मसात् किया और एक सच्चे अध्यात्मवादी साधक की भांति सही एवं 'सात्विक मानवतावादी जीवन-दर्शन की तलाश की। अस्तु, सूफीमत के क्रमिक विकास, इस्लाम की सैद्धान्तिक यात्रा, भारतीय इस्लाम तथा समूचे भारतीय समाज, दर्शन एवं संस्कृति के परिवेश के संदर्भ में ही फरीद की वाणी का सही मूल्यांकन हो सकता है।

बाबा फरीद मुलतान के रहने वाले थे और 'सन्देश रासक' की रचना भी पश्चिमी पाकिस्तान में, उसी के आस-पास किसी प्रदेश में हुई थी। लेकिन, इन दोनों की भाषा में बेहद अन्तर है। 'सन्देश रासक' की भाषा 'परवर्ती अपभ्रंश' अथवा 'ग्राम्य अपभ्रंश' है[13] जबकि बाबा फरीद की भाषा लहदी अथवा ठेठ पंजाबी का ऐसा परिनिष्ठित रूप प्रस्तुत करती है, जिससे उसे 15वीं, 16वीं शती की रचना मानने का भ्रम होता रहा है।

बाबा फरीद शकरगंज —व्यक्तित्व, परिवेश एवं प्रभाव[14] :

फरीदुद्दीन मसऊद बाबा फरीद शकरगंज के जन्म एवं मृत्यु के समय में कुछ मतभेद है, किन्तु सामान्य मान्यता यही है कि इनका जन्म खोतुवाल (मुलतान) में 1173 ई० में हुआ था और मृत्यु 93 वर्ष की आयु में ई० 1266 में अजोधन में हुई थी। इनके पिता शेख जमालुदीन सुलेमान का सम्बन्ध काबुल के बादशाह फरूखशाह से था। उनके पिता शेख शईब गज़नी एवं अफगानिस्तान के संघर्ष से तंग आकर काबुल छोड़कर भारत में आ बसे थे।[15] इनकी माता बीबी कुरसुम हज़रत अली के वंश में से थी।[16] वह परहेज़गार, पवित्र एवं धार्मिक जीवन व्यतीत करने वाली एक निष्ठावान मुसलमान थीं। उन्होंने आरम्भ से ही फरीद की

13. वही, पृ० 89।

14. इनका शकरगंज नाम किस प्रकार पड़ा। इस सम्बन्ध में कई किंवदंतियाँ हैं। सर्वमान्य है कि उनकी माता उनकी रुचि नमाज़ में उत्पन्न करने के लिए नमाज़ के स्थान पर शक्कर रख देती थी।.एक दिन जब फरीद ने अन्यत्र नमाज़ पढ़ी तो वहां भी शक्कर आ गई तभी से उन्हें शकरगंज कहने लगे। उनकी वाणी में शक्कर की-सी मधुरता,मिठास थी, इस लिये भी उन्हें शक्करगंज कहा जाता था। शेख के अतिरिक्त 'जवाहरे फरीदी' के अनुसार उनकी 'शेख उलइस्लाम, सुलतान उल मशाइख, शेख उस शिऊख, शेख उल इस्लाम' आदि अनेक उपाधियां थीं।

(पंजाबी दुनिया, फरीद अंक, पृ० 30)

15. शेख फरीद : चिंतन ते कला, पृ० 7-8

16. पंजाबी दुनिया, फरीद अंक, पृ० 43

वृत्ति धर्म की ओर मोड़ने का यत्न किया। वे उन्हें मिठाई आदि का प्रलोभन देकर पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ने की प्रेरणा देती रहती थीं। इस्लाम के ये संस्कार फरीद में सूफी होने के बावजूद अन्त तक बने रहे। वस्तुत:, उनके आचरण के विकास में उनकी माता का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मुल्तान इस समय मुसलमान पीरों-फकीरों का गढ़ बना हुआ था, जो प्राय: ईरानी या अफगानिस्तानी थे। फरीद का पालन-पोषण इसी धार्मिक वातावरण में हुआ। वहीं उन्होंने कुरान, हदीस, इलम-फिका, इलम-मतंक एवं तव्वसुफ आदि का अध्ययन किया। वे हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तिआर शाह काकी के मुरीद थे जो अपने युग के प्रसिद्ध सूफी विद्वान थे। तदनन्तर उन्होंने कंधार, बगदाद, ईराक, खुरासान, मक्का आदि स्थानों की यात्रा भी की और उस युग के अनेक प्रसिद्ध इस्लामी एवं सूफी फकीरों एवं विद्वानों से भेंट की। इसके अतिरिक्त वे दिल्ली एवं अजमेर आदि में भी ख़ुआजा मुईअनुदीन चिश्ती, ख़ुआजा कुतबुद्दीन बख़्तिआर काकी आदि के साथ कुछ समय रहे। कुछ समय वे हांसी (हरियाणा) में भी रहे। अंत में पाकपतन में आ बसे, जोकि मुसलमानों के लिए भारत आने का प्रमुख मार्ग था। फरीद 1188 ई० में पाकपतन आये थे और वहीं 1266 ई० में उनका देहावसान हुआ। इस तरह सूफी फकीरों की संगति से उनकी तव्वसुफ में निष्ठा और भी दृढ़ हो गई थी।

उत्तर भारत में इस समय सिद्धों एवं नाथ योगियों का बोल-बाला था। डॉ. विमल कुमार जैन का कथन है कि 11वीं शती से पूर्व ही योगियों का प्रभाव सूफियों पर पड़ गया था।[17] आगे के हिन्दी प्रेमाख्यानों में यह प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है, जहां उनके साधक प्राय: योगी बन कर परमतत्त्व की तलाश में निकलते हैं। फरीद भी इस प्रभाव से अछूते नहीं है। जिस प्रकार सिद्धों और नाथों ने लोक-भाषा का प्रयोग किया[18] तथा पश्चिमी अपभ्रंश में रचित उनके श्लोकों में पुरानी पंजाबी का स्पर्श है, उसी प्रकार फरीद ने भी अपनी वाणी का माध्यम मुलतान की जन-भाषा को ही बनाया जो पंजाबी का ही एक रूप है। अपभ्रंश के दोहा छन्द एवं रागों में 'शब्द-रचना' की पद्धति भी फरीद ने सम्भवत: उन्हीं से ग्रहण की। आडम्बर-युक्त वेश एवं पाखंडों आदि का खण्डन भी फरीद ने सिद्धों-नाथों की ही तरह किया। डॉ० मोहन सिंह की मान्यता है कि बाबा फरीद की कई योगियों से भेंट हुई थी।[19]

जैनमत का भी उस युग में यथेष्ठ प्रभाव था। विशेष रूप से मुलतान के समीप-

---

17. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 82
18. पंजाबी दुनिया—फरीद अंक, पृ० 43
19. वहीं,

वर्ती राजस्थान के क्षेत्र में जैनमत समादृत था। यद्यपि पश्चिमी पंजाब में उसने जड़ें नहीं पकड़ी थीं तथापि जैनमत के अहिंसा सम्बन्धी विचारों से फरीद प्रभावित जान पड़ते हैं।[20]

भारत की संस्कृति मूलतः तपस्या और त्याग की संस्कृति है। अत्यन्त प्राचीनकाल से हमारे साहित्य में ऐसे तपोवनों एवं आश्रमों का उल्लेख मिलता है, जहाँ साधु-संत, ऋषि-मुनि अनेक प्रकार की कठोर तपस्याएँ करते थे। गुरुनानक के समय में भी ऐसे साधुओं का उल्लेख मिलता है, जिन्हें उन्होंने व्यापार के लिए दिया गया धन बाँट दिया था।

भाई संतोषसिंह ने 'नानक प्रकाश' में इस प्रसंग में उस ओर के एक ऐसे आश्रम का उल्लेख किया है जहाँ अनेक साधु भाँति-भाँति की तपस्या करते दिखाये गये हैं।[21] निःसन्देह, फरीद के युग में भी ऐसे तपस्वियों की कमी नहीं थी और ऐसे साधु-संतों से निश्चय ही उनकी भेंट हुई होगी। यही कारण है कि वे मुसलमान होते हुए भी तपस्या का महत्त्व स्वीकार करते हैं। विद्वान इस बात से सहमत है कि उन्होंने स्वयं बड़ी कठिन तपस्या की थी।

शेख फरीद आध्यात्मिक परम्परा के कवि हैं। उस युग के साहित्य की वीर-रसात्मक अथवा शृंगारिक प्रवृत्ति से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था।

---

20. फरीद जो तै मारन मुकीग्रां, तिन्हा न मारे धुमि।
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुमि॥ 71

21. चलति चलति आयो इक कानन। ताहि बिलोकति श्री कमलानन। 42
सुन्दर आश्रम एक निहारी। जहिं तपीश तप तापहिं भारी।
किहि आसन किय उरध बाहू। बिटपन लटकनि को उलटाहू। 43
एक चरन पर को इक ठांढे। सुख परलोक जिनहि रुचि बांढै।
काहे सिंघासन को पदमासन। वारिपान को रहित बिनासन। 44
स्वेत रंग लागी भसमंगा। जटा सीस जिन धूसर रंगा।
किन वलकल लिय को अंग नंगा। अगनि उशन सों कोई उमंगा। 45
को बैठहि जल कंठ प्रमाना। सिमर इकाकी को भगवाना।
को ठांढै दिन-रैन बितावै। को मोनी नहिं वचन अलावै। 46
—नानक प्रकाश पू० अध्याय 14

(अर्थात चलते-चलते एक वन आया, वहां कमल जैसे मुख वाले गुरु नानक ने एक सुन्दर आश्रम देखा, जहां तपस्वी अनेक प्रकार के तप कर रहे थे। कोई ऊपर बाँहें करके आसन कर रहे थे। कोई वृक्षों पर उलटे लटके हुए थे। कोई एक पांव पर खड़े हुए थे। कोई सिंहासन पर समाधि लगाये हुए थे, कोई जल पीकर ही तथा कोई बिना भोजन के रह रहे थे। किसी के शरीर पर श्वेत रंग की भस्म लगी हुई थी, किसी के सिर पर मटियाले रंग की जटायें थीं। कोई कंठ तक जल में बैठा हुआ था कोई एकान्त में हरिस्मरण कर रहा था। कोई खडे रहकर ही दिन-रात बिता देता था, कोइ मौन धारण किये था। (इत्यादि)।

यद्यपि फरीद विवाहित थे[22] किन्तु, गृहस्थी होते हुए भी वे 'दरवेशी' जीवन व्यतीत करते थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली एवं आकर्षक था। उनका जीवन त्याग, तपस्या, संयम एवं संतोष का जीवन था। वे गरीबी में रहने वाले अत्यन्त विनम्र एवं निरभिमानी व्यक्ति थे। ज्ञानी लालसिंह जी ने उनके विलक्षण व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, वह उल्लेखनीय है। वे फरीद के प्रति अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लिखते हैं :—

"बाबा फरीद जीवन अखाड़े का पहलवान था। उसने बुद्धि, मन एवं शरीर को पूर्णतया तपाया एवं पकाया हुआ था। उसने बुद्धि को कुरान, हदीस, तफसीर, शरह, फिका आदि के ज्ञान से मुलतान, कंधार, रूम एवं ईरान आदि के प्रसिद्ध मदरसों में माँजा-सवारा था। मन को हुजरे में बैठकर जप-तप अग्नि से ख़ुआजा कुतबुदीन बुखतिआर काकी की भट्टी पर जाकर खूब तपाया था। शरीर को रिआज़त एवं ज़ुहद से मिट्टी के पात्र की भाँति आवे पर चढ़ा लिया था। इस प्रकार फरीद की प्राप्ति एकरंगी नहीं, बहुरंगी थी। जिस प्रकार मधुमक्खी का मधु-संचय एक पुष्प का नहीं, वरन् विविध सुमनों का रस होता है।[23] नि: सन्देह, बाबा फरीद ने रिआज़त, इबादत, ज़ुहद एवं जिकर में काफी आयु बिताई थी और जीवन के अनेक अनुभव प्राप्त किये थे। उन्होंने अपने जीवन के इन यथार्थ अनुभवों को ही अपनी कविता में अंकित किया है। कवि-जीवन में घटित घटनाओं का प्रतिबिम्ब उनकी कविताओं में झलकता है। उनके शब्द-चित्र जीवन-अनुभूतियों के मुँह बोलते चित्र हैं। उनकी अनुभूति अत्यन्त प्रामाणिक है और उनका जीवन-दर्शन उनके भोगे हुए यथार्थ अनुभवों का निचोड़ है। उनका निजत्व ही व्यापक होकर उनकी कविता का काव्यरस बन गया है। अभिव्यक्ति की सरलता, सहजता, स्पष्टता एवं मार्मिकता का भी यही रहस्य है। उनकी सारी कविता एक सही सच्चे और सात्विक जीवन की तलाश है।

आध्यात्मिक विचार

फरीद ने एक धर्म आचार्य की भाँति सूफीमत अथवा इस्लाम के सिद्धान्तों की पांडित्यपूर्ण मीमांसा नहीं की। यह दूसरी बात है कि उनकी आस्था और विश्वास के अनुरूप सूफीमत एवं इस्लाम दोनों के कुछ पक्षों का उद्घाटन उनकी कविता में हुआ है। फरीद अल-गज़ाली की परम्परा के सूफी हैं, पर गज़ाली

---

22 'जवाह्-ई-फरीदी' के अनुसार उनके चार विवाह हुए थे। उसकी पत्नियों के नाम थे—बीबी शारदा, शकूर, हजवरा तथा एक विधवा कुलसूम। इनसे उनके पांच पुत्र तथा तीन लड़कियां उत्पन्न हुई थीं। कोई पुत्र ६-७ भी मानते हैं। उनकी एक पत्नी हाजिरा (हजवरा) बादशाह बलबन की पुत्री थी। हज़रत निजामुद्दीन औलिया आपके दामाद थे।

23. शेख फरीद, जीवन ते रचना, पृ० 394

महान् दार्शनिक था, फरीद केवल साधक है। सूफी सिद्धान्तों की जैसी गम्भीर व्याख्या गज़ाली ने की है, फरीद में उसका अभाव है। फरीद में बौद्धिकता की अपेक्षा भावुकता अधिक है।

'अल्लाह्'

सूफियों की साधना का केन्द्र 'अल्लाह्' (परमात्मा) है। सनातन पंथी इस्लाम एकेश्वरवादी है। उसके अनुसार परमात्मा एक है, वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्त्ता, अल-हक्क (सत्य), शाश्वत एव अनश्वर है।[24] उनके अनुसार 'मनुष्य और अल्लाह के बीच का सम्बन्ध निरंकुश स्वामी और दास का है।[25] वे 'ईश्वर का अस्तित्व जगत् से पृथक मानते हैं।[26] आरम्भ में सूफियों ने भी ब्रह्म, जीव, सृष्टि आदि के स्वरूप को कुरान की ही भाँति समझाने की चेष्टा की, किन्तु बाद में उनके सिद्धान्तों में पर्याप्त अन्तर आने लगा। सूफियों ने कुरान के 'तौहीद' अर्थात् एकेश्वरवाद को ग्रहण तो किया, किन्तु उसकी 'हदतुल वजूद' रूप में व्याख्या की, अर्थात् सब सत्ता एक है और वह ईश्वर है।" उनके अनुसार जगत में परिव्याप्त एक मात्र वही सत्य है—निखिल विश्व परमात्मा के साथ एक है तथा प्रतीयमान जितनी भी सत्ताएँ हैं वे उसी में अन्तर्निहित हैं।[27] अधिकांश सूफियों की आस्था है कि ईश्वर दृश्यमान जगत से परे रहकर भी उसमें लीन है।[28]

'फरीदी श्लोकों' में ब्रह्म के स्वरूप का विशेष विवेचन नहीं हुआ। एक श्लोक में इस तथ्य का निरूपण हुआ है कि ईश्वर सृष्टि में बसता है और सृष्टि उस सर्जन कर्त्ता में समाई हुई है।[29] किन्तु, यह श्लोक गुरु अर्जुनदेव का माना जाता है। फरीद ने अपने एक श्लोक में यह अवश्य कहा है कि "ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वन में भटकना व्यर्थ है, **क्योंकि ईश्वर तो हृदय में निवास करता है**।"[30] यह

---

24. रामपूजन तिवारी, सूफीमत साधना और साहित्य, पृ० 248-250
25. वही, पृ० 250
26. सूफी काव्य संग्रह, पृ० 20
27. सूफीमत साधना और साहित्य, पृ० 250-251
28. परशुराम चतुर्वेदी, सूफी काव्य संग्रह, पृ० 21
29. फरीदा 'खालक खलक महि, खलक बसै रब माहि'। 75
30. फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोडेहि।
    (क) वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूंढेहि। 19
    (ख) कागा चूंडि न पिंजरा बसै तू उडरि जाहि।
        जितु पिंजरै मेरा सहु बसै मासु न तिदू खाहि। 92
    (हे काग ! मेरे दिल को मत कुरेद, यदि तेरा वश चले तो उड़ जा। जिस दिल रूपी पिंजरे में मेरा प्रियतम बसता है, उसका मांस न खा)।

मत सूफ़ियों के ही अनुरूप है, क्योंकि इस्लाम में मनुष्य की स्थिति ईश्वर से अलग मानी गई है। सूफियों ने ईश्वर को कुरान की भांति साकार नहीं माना क्योंकि वह किसी निश्चित स्थान पर स्थित न हुआ, मन मन्दिर में ही राजित है।[31] रूमी के अनुसार भी 'वह खजाने की तरह हृदय में स्थित है, उसे हृदय में ही खोजना होगा, बाहर नहीं खोजना है।[32] सूफीमत में परमात्मा निराकार ही है, किन्तु प्रेम का केन्द्र होने के कारण सगुण है। फरीद ने कहीं भी उसके साकार रूप का उल्लेख नहीं किया, यद्यपि उसे 'रब्ब' के अतिरिक्त 'कंत', 'शुहु' आदि अवश्य कहा है, उसके साथ मिलन-आकांक्षा भी प्रकट की है, पर वह निराकार ही है। फरीद के अनुसार वह परमात्मा अगम, अथाह,[33] बेअंत,[34] सर्व-व्यापक (सब जीवों में समाया हुआ)[35] तथा सत्य स्वरूप है। फरीद ने परमात्मा के न्याय-कर्त्ता रूप का निरूपण तो किया है, किन्तु इस्लाम की भाँति उसके निवास-स्थान आदि का उल्लेख नहीं किया। फरीद ने "परमात्मा को मधु एवं खजूरों से भी मीठा कहा है।"[36]

मुहम्मद

इस्लाम में अल्लाह के पश्चात् दूसरा स्थान मुहम्मद का है। नमाज़ के समय अल्लाह के साथ मुहम्मद का भी नाम स्मरण किया जाता है।[37] सूफियों की ईश्वर को छोड़कर और किसी पर आस्था नहीं। सूफी मुहम्मद साहब को दिव्य पुरुष मानते हुए भी एक पूर्ण पुरुष के रूप में ही देखते हैं, किन्तु ईश्वर के मिलने में कुरान की भाँति मध्यस्थ नहीं मानते।[38]

फरीद की कविता में मुहम्मद, कुरान अथवा कलमा आदि का कोई उल्लेख नहीं मिलता। उसने परमात्मा को छोड़कर अन्य देवी-देवताओं की उपासना की भर्त्सना की है। उसके अनुसार परमात्मा मानसरोवर हैं जहाँ डुबकियाँ लगाने से मोती मिलते हैं। छप्पड़ (गन्दा तालाब) में डुबकी लगाने से कीचड़ ही हाथ

31. विमलकुमार जैन, सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 46
32. सूफीमत साधना और साहित्य, पृ० 281।
33. माहुरे पैईए कंत की कंतु अगम, अथाहु पृ० 32।
34. परवदगार अपार अगम बेअंत तू। 31
35. इकु फिका न गालाइ सभना मैं सचा धणी। 129
36. फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिआ नई वहंन्हि। 89
37. कलमा—ला इला इल्लिलाह मुहम्मद रसूलिल्लाह।
38. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 52-53

आएगा ।[39]

फरिश्ते

इस्लाम में अल्लाह और मुहम्मद के पश्चात तीसरा स्थान 'फरिश्तों' का है। वहाँ उनकी काफी महत्ता है, उनके अलग-अलग काम हैं। इन्हें देवता माना गया हैं। प्रसिद्ध फरिश्ते जिबरील, मिकाईल, इसराफील और ईजराईल हैं। 'इब्लीस' फरिश्ता 'शैतान' नाम से प्रसिद्ध है। कुरान के अनुसार इसका काम दूसरों को पथभ्रष्ट करना है। सूफी फरिश्तों की सत्ता पर विश्वास करते हैं, किन्तु वे उन्हें कुरान की तरह महत्त्व नहीं देते। उनकी दृष्टि में वे अतिमानुषी शक्ति से पूर्ण प्राणी है। शैतान को भी वे इस्लाम की भाँति कुपथनेता नहीं मानते। वे उसे पाप-प्रणिधि मानते हुए भी निजत्व का परिचायक मानते हैं। उसका निषेध ईश्वरीय आज्ञा के अनुकूल ही था।[40] फरीद की कविता में सभी फरिश्तों के स्वरूप अथवा महत्त्व का निरूपण तो नहीं हुआ, किन्तु ईजराईल नामक फरिश्ते का वर्णन अवश्य हुआ है,[41] जिसे मौत का फरिश्ता बताया गया है।[42] फरीद ने जिस तरह इसे महत्ता दी है, उससे प्रतीत होता है कि फरीद में फरिश्तों को वही स्थान प्राप्त है, जो इस्लाम में है।[43] फरीद की कविता में शैतान को भी वही महत्व दिया गया है जो इस्लाम में है, क्योंकि यहाँ भी उसे मनुष्य को बुराई की ओर ले जाने वाला बताया गया है।[44]

पीर-फकीर

पीर-फकीरों की सूफीमत में बड़ी प्रतिष्ठा है।[45] देवी सत्ता के साथ अभेद स्थापित करने वाला ऐसा पूर्ण पुरुष ईश्वर का प्रतिरूप है। सूफी अपने गुरु को

---

39. (क) फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु।
    छपड़ि ढूंढें किआ होवै चिकडि डुबै हथु। 53
    (ख) धिगु तिन्हा दा जीविआ जिनां विडाणी आस। 21
    (ग) फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझे न देहि। 42
40. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 53-54
41. फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी तुटी नागर लजु।
    अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु। 681
42. मलकलमउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि। 100
43. शेख फरीद जीवन ते रचना, पृ० 303
44. फरीदा कूकेदिआं चांगेदिआ मती देदिआं नित।
    जो शैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित 115।
45. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 54।

संसार में सबसे अधिक प्रेम करता है, क्योंकि वह भ्रमपूर्ण संसार में उसका मार्ग-दर्शन करता है।[46] फरीद ने 'पीर' की महिमा की ओर संकेत मात्र किया है। जायसी आदि हिन्दी के परवर्ती कवियों की भाँति उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का वर्णन नहीं किया। 'फकीरी' और 'दरवेशी' को फरीद अत्यधिक महत्त्व देते हैं। उनका अपना जीवन दरवेशी का आदर्श था और उनकी कविता भी मुख्यतः दरवेशी की ही कविता है।

फरीद ने जीव अथवा आत्मा के स्वरूप का विवेचन भी नहीं किया। इतना संकेत अवश्य किया है कि कियामत (निर्णय) के दिन तक रूहें मृतक शरीर के साथ कबरों में रहती है।[47] कुरान की भी यही मान्यता है कि निधन के उपरान्त सभी आत्माएँ निर्णय के दिन की प्रतीक्षा करेंगी।[48] इस्लाम का आवागमन अथवा पुनर्जन्म में भी विश्वास नहीं है। इस्लाम के अनुसार निर्णय के पश्चात् ईश्वर के प्यारों को स्वर्ग (बहिशत) मिलता है और बुरे कर्मों वाले को नरक (दोज़ख)।[49] इस्लाम मे स्वर्ग नरक का बड़ा विशद वर्णन मिलता है। सूफीमत के अनुसार "मृत्यु के पश्चात का जीवन इस जीवन की गुप्त वास्तविकताओं को प्रकाश में लाना है और उसको अविराम रखना है। स्वर्ग-नरक का भी वहाँ अभाव है। शिवली के अनुसार नरक ईश्वर से पृथकता है और स्वर्ग समीपता है।"[50] वास्तव में ईश्वर का सिंहासनारूढ़ होना और निर्णय के दिन रसूल के नेतृत्व में सब को प्रतिफलन मिलना सूफियों को मान्य नहीं, क्योंकि उनके अनुसार मनुष्य का हृदय ही ईश्वर का सिंहासन है।[51] नरक के भय एवं स्वर्ग सुख की अवहेलना करते हुए प्रसिद्ध सूफी राबिया ने कहा था कि "हे प्रभु यदि मैं तेरी प्रार्थना केवल नरक-यंत्रणा से बचने के लिए करती होऊं तो मुझे नरक में डाल रख, और यदि स्वर्ग-सुख के लिए ऐसा करती होऊँ तो तू मुझे उससे भी वंचित रखा कर। किन्तु, यदि मैं तेरी उपासना केवल तेरे लिए ही करती होऊँ तो तू मेरे लिए अपना शाश्वत सौन्दर्य एवं माधुर्य प्रकट करने में कभी विलम्ब न कर।[52] फरीद ने अपनी कविता में पुनर्जन्म, आवागमन, जीवन को अविराम रखने अथवा 'मुक्ति' आदि में कोई आस्था प्रकट नहीं की। 'अनलहक' की स्थिति भी उनमें नहीं मिलती। इसके विपरीत इस्लाम के मतानुसार 'मांई के दरबार' अथवा 'दरगाह' में निर्णय की बात उन्होंने

---

46. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 55
47. गोरां से निमाणीआं वहसनि रूहां मलि, 97
48. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 50
49. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 50
50. वही, पृ० 51
51. वही, पृ० 51
52. सूफी काव्य संग्रह, पृ० 18

कई स्थानों पर कही है।[53] इसी प्रकार स्वर्ग-सुख का वर्णन तो उन्होंने नहीं किया, किन्तु नरक (दोज़ख) की भयंकरता एवं उसके कष्टों का निरूपण इस्लाम की ही भाँति किया है।[54] 'दोज़ख' का डर दिखाकर वे मनुष्य को ईश्वर से प्रेम करने की प्रेरणा देते हैं।

सृष्टि-जगत

फरीद ने सृष्टि-रचना अथवा जगत की ऐसी दार्शनिक व्याख्या नहीं की जिसे यह कहा जा सके कि उनके विचार इस्लाम के अनुरूप थे अथवा सूफियों के। सूफियों के अनुसार सृष्टि की रचना परमात्मा ने अपनी इच्छा से की। उस निरपेक्ष, परम सत्ता को अपने को प्रकट करने के लिए इस असत् क्षणभंगुर जगत की सृष्टि करनी पड़ी।[55] यह संसार नाशवान है, भ्रम है।[56] उनके अनुसार यह दृश्यमान जगत जो अवास्तविक है, असत् के दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाला उस परम सत्ता का प्रतिबिम्ब है।[57] इब्नुल अरबी का कथन है कि दृश्यमान जगत उसी परम सत्ता की अभिव्यक्ति है। परमात्मा और जगत में साम्य है। यह साम्य 'जात' और 'सिफ्त' का है। यह संसार उसके सिफ्त (गुणों) की अभिव्यक्ति (तजल्ली) है, उसके अनुरूप है।[58] फरीद ने सृष्टि-रचना के सम्बन्ध में इस प्रकार का तथ्य निरूपण नहीं किया और न ही इस्लाम की भांति सृष्टि-रचना के स्वरूप पर प्रकाश डाला है। फरीद ने संसार की अस्थिरता, अवास्तविकता, क्षणभंगुरता आदि का निरूपण कई श्लोकों में किया है। संसार की यह अवास्तविकता ईश्वर का बोध अवश्य करवाती है, और उससे प्रेम करने की प्रेरणा भी देती है, किन्तु सूफियों की भाँति उसमें ब्रह्म के प्रतिबिम्बित होने की कल्पना फरीद ने नहीं की।

फरीद के अनुसार यह सुन्दर दिखाई देने वाला संसार दुःखों का घर है। यह

---

53. (क) फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण से कमडे बिसारि।
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि। 59
(ख) फरीदा अमलु जि कीते दुनी विचि दरगाहि आए कमि। 100

54 फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि। अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि। 74

55. सूफीमत साधना और साहित्य, पृ० 252

56. वही, पृ० 253

57. वहीं पृ० 253

58. वही, पृ० 256

अग्नि समान है ।[59] यह परिवर्तनशील, अस्थिर, असत्य एवं नाशवान है ।[60] संसार की नश्वरता का वर्णन करते हुए फरीद कहता है, 'हे फरीद ! अनेकों पक्षी जिन्होंने सरोवर के तट की शोभा बढ़ाई हुई थी, अपनी अपनी बारी पर चले गए हैं। इस तरह एक दिन यह सरोवर भी सूख जाएगा और जो एक-दो बचे हुए कमल-पुष्प आदि है, उनका भी नाश हो जाएगा ।"[61] फरीद के अनुसार यह संसार एक सुन्दर उपवन अथवा सराय है, जहाँ आत्मा-रूपी पक्षी एक अतिथि है। प्रात: का नगारा बज गया है, इसलिए अब यहाँ से चलने की तैयारी करनी चाहिए ।[62] यह संसार ऐसी भयंकर आग है किन्तु इसमें जल रहे जीव को न तो अपने जलते रहने का ही बोध होता है और न ही इससे बचने का कोई मार्ग सूझता है । ईश्वर की कृपा से फरीद इस अग्नि से बच गया है, अन्यथा वह भी इस संसार रूपी अग्नि में जल जाता ।[63]

सांसारिक सम्बन्धों की नश्वरता का चित्रण करते हुए फरीद कहते हैं :—

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्हीं तू जणिओहि ।
तै पासहु ओइ लदि गए तू अजै न पतीणोहि ।।[64]

फरीद का कहना है कि संसार का सारा वैभव, सुन्दर मनोरंजक दृश्य, स्वादिष्ट पदार्थ आदि सभी कुछ अवास्तविक, अस्थिर एवं नाशवान है, फिर इनमें मन लगाने से क्या लाभ। ये महल, ये चौबारे सभी नश्वर हैं, अत: इन महलों के प्रेम को छोड़कर ईश्वर से प्रेम करना चाहिए ।[65]

---

59. फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जग ।
ऊचे चढि के देखिआ, तां घरि घरि एहा अगि । 81

60. (क) फरीदा रुति फिरी, वणु कंबिआ पत झडे झडि पाहि ।
चारे कुंडा ढूंढीआं रहणु किथाऊ नाहि । 102
(ख) झूठी दुनिआ लगि न आपु वञाइऐ । आसा 2

61. चलि चलि गईआं पंखीआ जिन्हीं वसाए तल ।
फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल । 66

62. फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ।
नउबति बजी सुबह सिउ चलण का करि साजु । 79

63. किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ।
साई मेरै चंगा कीता नाही ते हंभी दझा आहि । 3

64. तेरे माता-पिता जिन्होंने तुझे जन्म दिया था, कहां हैं, वे तेरे पास से चले गए है, तुम्हें अभी भी विश्वास नहीं हुआ कि तू भी एक दिन चला जाएगा ।

65. (क) फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ।
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए । 46
(ख) फरीदा कोठे मंडप माडीआ ऐतु न लाए चितु ।
मिटी पई अतोलवी कोई न होसी मितु । 57
(ग) फरीदा मंडप मालु न लाइ, मीरग सताणी चिति धरि ।
सांई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वञणा । 58
(घ) पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ।
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड । 45

इस प्रकार फरीद ने संसार की नश्वरता एवं मिथ्यात्व का निरूपण करके उसके मोह आकर्षण को त्याग कर ईश्वर से प्रेम करने का आग्रह किया है। प्रसिद्ध सूफी शिब्ली ने "ईश्वर के अतिरिक्त अखिल विश्व के त्याग को तसव्वुफ कहा है।[66] अबुलहसन अलनूरी के अनुसार भी सूफीमत संसार के प्रति घृणा और प्रभु के प्रति प्रेम-रूप गम्भीर धार्मिक भावों का प्रकाशन है।[67] निःसन्देह, फरीद इस मत के समर्थक हैं। तथापि संसार एवं शरीर आदि की नश्वरता का निरूपण उन्होंने जिस प्रकार से किया है, वह बहुत कुछ भारतीय विरक्ति मूलक अध्यात्म-चिंतन के अनुरूप है, जिससे फरीद काफी प्रभावित जान पड़ते हैं।

शरीर-मृत्यु

शरीर की नश्वरता एवं क्षण-भंगुरता का निरूपण भी फरीद ने विशदता से किया है। सूफियों के अनुसार मनुष्य में परमात्मा के सत् एवं सृष्टि (जगत) के असत् का संयोग होता है।[68] लेकिन फ़रीद ने मनुष्य के शरीर उसकी सुन्दरता, यौवन, वैभव, मानमर्यादा आदि की अवास्तविकता अथवा मिथ्यात्व एवं नश्वरता आदि का चित्रण एक विरक्त साधु की तरह किया है। मनुष्य के शरीर को उन्होंने नदी के किनारे का ढहता हुआ वृक्ष अथवा जल में पड़े क्षण-क्षण छीजते मिट्टी के कच्चे घड़े के समान कहा है।[69] मनुष्य जीवन मृत्यु रूपी दरियाव के ढह रहे उस किनारे की तरह है, जो क्षण क्षण क्षीण होता जा रहा है और मालूम नहीं वह कब गिर पड़े। मौत के आगे दोज़ख (नरक) की आग जल रही है और हाहाकार मचा हुआ है। मनुष्य के शरीर की जर्जरता एवं शिथिलता का चित्रण करते हुए फरीद लिखते हैं कि उनका शरीर बूढ़ा हो गया है, देह काँपने लगी हैं, बाल सफेद हो गए हैं, तू चाहे सौ वर्ष भी जी ले किन्तु एक दिन मिट्टी अवश्य हो जाना है।[70]" सुन्दर शरीर रूपी घड़ा टूट गया है, लेजू भी टूट गई है और मौत का फ़रिश्ता आ पहुंचा है।[71] हंस जैसा सुन्दर बगुला नदी के किनारे बैठा किलोल कर रहा था, कि अचानक उस पर मृत्यु रूपी बाज टूट पड़ता है और

---

66. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृ० 4
67. वही, पृ० 3-4
68. सूफीमत साधना और साहित्य, पृ० 254
69. फरीदा मडतै दा बँना एवै दिसै जिउ दरीआवे ढाहा।
    अगै दोजक तपिआ सुणीऐ हूल पवै कहाहा॥ 98
70. बुढ़ा होआ शेख फरीदु कंबणि लगी देह।
    जे सउ वरहिआ जीवणा भी तनु होसी खेह। 41
71. फरीदा भनी-घड़ी सवंनवी तुटी नागर लजु।
    अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु। 68

उसकी सारी क्रीड़ाएं समाप्त हो जाती है।[72] पक्षी तो एक है और उसे पकड़ने वाले पचासों हैं।[73] यह शरीर लहरों में घिर गया है, एक प्रभु का ही सहारा है।[74] वास्तविकता यह है कि "मनुष्य का यह शरीर साढ़े तीन मन का भार है, जो अन्न जल के सहारे चल रहा है, जब मौत का फरिश्ता सभी द्वार तोड़ कर आ धमकेगा तो शरीर के सभी अंग निकम्मे कर देगा। वे ही सम्बन्धी जो उसे अत्यधिक स्नेह करते थे, आप ही बाँध कर यमराज के आगे कर देंगे। उस समय मनुष्य चार व्यक्तियों के कंधे पर चढ़कर कबर की ओर चल पड़ता है, अच्छे कर्म ही आगे काम आएँगे।[75] मृत्यु रूपी सुलतान दो दीपकों के जलते ही शरीर रूपी गढ़ विजय करने के लिए आ पहुँचा, उसने अन्दर का सारा माल लूट लिया और दीपक बुझा दिया। मृत्यु शरीर की हड्डियां कड़का कर उसका सर्वनाश कर देती है।" जीवन एवं मृत्यु के सम्बन्ध को वधु एवं वर के रूपक के माध्यम से फरीद ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है---

"जितु दिहाड़े धन वरी साहे लए लिखाई ।।
मलकु जि कंनी सुणीदा मुहुदेखाले आइ ।।
जिंदु निमाणी कढीए हडां कू कड़काइ ।।
साहे लिखे न चलनी चिंदु कूं समझाइ ।।
जिंदु वहुटी मरणु वरू लै जासी परणाइ ।।
आपन हथी जेलि के कै गलि लगै धाइ ।।
वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणीआइ ।।
फरीदा किडी पंव दीई खड़ा ना आपु मुहाइ ।।1।।

(अर्थात जिस दिन स्त्री रूपी जीव ने ब्याही जाना है, इसने अपना साहा पहले ही निकलवाया हुआ है (मृत्यु का क्षण पूर्व निश्चित है), उस दिन 'मलकउलमौत, (यमराज) जिसके सम्बन्ध में पहले सुना हुआ था, आकर मुंह दिखा देता है, वह

---

72. फरीदा दरीग्रावै कंनै बगुला बैठा केल करे।
केल करेदे हंझ नो ग्रचिंते बाज पए। 99

73. सखर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास।
इहु तनु लहरी गडु थिग्रा सचे तेरी ग्रास। 125

74. साढे चै भण देहुरी चले प्राणी ग्रंनि।
ग्राइउ बंदा दुनी विचि वति ग्रासूणी बंनि।
मलकलमउत जां ग्रावसी सभ दरवाजे भंनि।
तिना पिग्रारिग्रा भाईग्रां ग्रगै दिता बंनि।
वेखहु वंदा चलिग्रा चहु जणिग्रा दे कंनि।
फरीदा ग्रमल जि कीते दुनी विचि दरगाहि ग्राए कंमि। 100

75. फरीदा दुहु दीवी बलंदिग्रा मलक बहिठा ग्राइ।
गडु लीता घटु लुटिग्रा दीवडे गिआ बुझाइ। 48

बेचारी आत्मा को हड्डियां कड़का कर शरीर में से निकाल लेता है। इसलिए, हे बंदे ! जीवात्मा को समझा कि लिखा हुआ साहे का क्षण (मौत) टल नहीं सकता। तब जीव रूपी वधू को यमराज रूपी पति विवाह कर ले जाएगा। मनुष्य का शरीर जब आप ही से उसे विदा कर देगा, तब किसके गले लग कर रोएगा। हे शरीर ! क्या तू बाल से भी सूक्ष्म सराय के सेतु के सम्बन्ध में नहीं जानता। वहाँ तुझे पीछे से आवाज़ें पड़ेंगी जिनको सुनकर धोके में मत आ जाना)।"

"मनुष्य का सांसारिक घर तो थोड़े ही समय के लिए है, उसका असली घर तो कबर है जहां उसे मृत्यु के पश्चात कयामत (निर्णय) के दिन तक रहना है।"[76] अतः फरीद का कहना है कि यह शरीर तुच्छ है, कबर में पड़ा-पड़ा खाक हो जाएगा, इसलिए उसका मोह मत करो, और ईश्वर में मन लगाओ।[77]

मनुष्य को अपने यौवन एवं अपनी सुन्दरता का गर्व है, लेकिन वह तो क्षणिक है, अस्थायी है, नाशवान है। क्योंकि यौवन के पश्चात बुढ़ापा आ जाता है फिर मृत्यु।[78] यौवन मे जो चरण रेगिस्तान और पर्वत पार कर लेते थे, वे ही अब पास पड़ा हुआ पात्र भी नहीं उठा सकते।[79] सभी इंद्रियां शिथिल हो जाती हैं, नेत्र, दाँत, कान, टाँगें सभी निकम्मे हो जाते हैं।[80] जिन सुन्दर नेत्रों ने सारा संसार मोह लिया था, जो इतने नाजुक थे कि काजल का बोझ भी नहीं सह सकते थे कि अब उनमें पक्षियों के बच्चे बैठे हैं।[81] यह इतना सुन्दर शरीर जब मरने के पश्चात् कबर में पड़ा होगा, तो सिर के नीचे ईंट होगी, यह पृथ्वी पर पड़ा होगा, तथा इसके मांस को कीड़े खा रहे होंगे। इस तरह पड़े हुए कई युग व्यतीत हो जाएंगे। इसलिए मनुष्य को शरीर की सुन्दरता का गर्व नहीं करना चाहिए। संसार-सागर को पार करने के लिए यौवन ही उचित अवसर है इसलिए इस समय

---

76. फरीदा गोर निमाणी सडु करे निधरिआ घरि आउ ॥
सर पर मैथै आवणा मरणहु न डरिआहु। 93
77. बोले सेख फरीदु पिआरे अलह लगे।
इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे। आसा
78. देखु फरीदा जु थीआ दाडी होई भूर।
अगहु नेडा आइआ पिछा रहिआ दूरि।
79. फरीदा इनीनिकी जंघीए थल डूगहि भवि आोमि।
अजु फरीदे कूजडा सै कोहां थी ओमि। 20
80. चवण चलण रतंन से सुणीअर बहि गए।
हेडे मुती धाह से जानी चलि गए। 77
81. फरीदा जिन लोइण जगु मोहिआ, से लोइण मै डिठु।
कजल रेख न सह दिया से पंखी सूइ बहिठु। 14

मनुष्य को ईश्वर से प्रेम करना चाहिए[82]।

यह सारा वैभव भी यहीं रह जाएगा। मनुष्य को खाली हाथ जाना पड़ेगा। इसलिए इसका भी अहंकार नहीं करना चाहिए। "जिन व्यक्तियों के पास धौंसे बजते थे, जिन के सिर पर छत्र झूमते थे और बड़े-बड़े नगारे सदा खड़कते थे, वे लोग कब्रिस्तान में जा सोये हैं और कुछ समय कबर में ही गड़े रहकर अनाथ बन जाएंगे[83]। बड़े-बड़े मकान, महल, चौबारे वाले भी मर गए। वे सब लोग माया का झूठा स्नेह करते थे और अंत में कबर में आकर सो गए[84]। फरीद का कहना है कि निर्णय के दिन माया से मोह करने वाले धनियों को सजा मिलेगी[85]।

मनुष्य अहंकारवश इस चिंता में रहता है कि उसकी मान-प्रतिष्ठा बनी रहे। उसकी पगड़ी मैली न हो। फरीद का कहना है कि वह भोला इन्सान यह भूल जाता है कि उसके सिर को भी मिट्टी ने खा जाना है[86]।

"ये विषय-सुख विष के समान है। माया के भोग, जिन्हें मनुष्य स्वादिष्ट समझकर भोग रहा है, विष की तरह उसे मार रहे हैं[87]। "यह सारा मनुष्य जीवन चिन्ता एवं दुखों का घर है[88], उसकी जीवन यात्रा अति दुःखदायक है, खांडे की धार से भी तीखी है ; इस शरीर में श्वास थोड़े हैं और यौवन क्षणिक है, अतः समय रहते परमात्मा से प्रेम करना चाहिए। मनुष्य अपनी ज़िन्दगी के चार प्रहर तो माया की लालसा में घूम फिर कर गंवा देता है, चार प्रहर सो कर

---

82. फरीदा इट सिराणे, भुइ सवणु कीडा लडिश्रोमासि।
केतडिश्रा जुग वापरे इकतु पइश्रा पासि। 67

83. पासि दमामे छत सिरि भेरी सडो रड।
जाइ सुते जीराण महि थीए श्रतीमा गड। 45

84. फरीदा कोठे मंडप माड़ीश्रा उसारेंदे भी गए।
कूड़ा सउदा करि गए गोरी श्राइ पए। 46
फरीदा महल निसरवण रहि गए वासा श्राइश्रा तलि।
मोरां सो निमाणीआ बहसनि एहां मलि। 97

85. श्लोक संख्या 44

86. फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ।
गहिला रूहु न जाणई सिर भी मिटी खाहि। 26

87. देखु फरीदा जि थीश्रा सकरू होई विसु।
सांई बाझहु श्राप णे वेदण कहीए किसु।।10

— — —

फरीदा ए बिसु गंदला धरीश्रां खंडु लिवाड़ि। 37

88. फरीदा चित खटोला वाणु दुखु बिरह विछावण लेफु।
एह हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु। 35

गुज़ार देता हैं, प्रभु जब हिसाब माँगेंगे कि तू संसार में क्या इसीलिए आया था तब वह क्या उत्तर देगा। यह सब कुछ सोच-समझकर तथा संसार और शरीर की वास्तविकता को भली-भाँति देखकर ही फरीद कहता है कि मनुष्य को चाहिए कि यौवन रहते ही, इस शरीर की सुन्दरता, वैभव ,मान, प्रतिष्ठा आदि का मोह अथवा अहकार त्याग कर परमात्मा में मन लगाए[89]। यही सुन्दर अवसर है। यह संसार और शरीर तथा सारा मनुष्य जीवन दुखों का घर है,जबकि वह परमात्मा सभी सुखों का घर है। शहद और खजूर से भी मीठा है। इसलिए फरीद बार-बार यही प्रेरणा देते हैं कि हे मनुष्य अल्लाह से प्यार कर, यह शरीर खाक हो जाएगा और कबर में जाकर गिरेगा[90]।

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट है कि फरीद ने संसार एवं मनुष्य-जीवन का, शरीर की सुन्दरता, यौवन, वैभव, यश, मान-मर्यादा आदि की अस्थिरता, अवा-स्तविकता, क्षणभंगुरता अथवा नश्वरता आदि का वर्णन बड़ी विशदता से किया है। उनकी अधिक वाणी इसी विषय से सम्बन्धित है। कभी तो वे जर्जरित वृद्ध शरीर की शिथिलता का दृश्य प्रस्तुत करते हैं, कभी उसकी सुन्दरता को विलीन होते दिखाते हैं, कभी उसके वैभव के नष्ट होने का चित्र उपस्थित करते हैं, कभी उसकी मान-प्रतिष्ठा को खंडित होते दिखाते हैं, कभी मौत का भयानक रूप दिखाते हैं तथा कभी दोज़ख की आग की ओर संकेत करते हैं, और इस प्रकार विषय-वासनाओं को विष सदृश्य समझकर, मोह, माया और अहंकार को त्याग कर इस दुनिया को दुःखों का घर समझकर परमात्मा के प्रति मन लगाने की प्रेरणा देते हैं, जो सुखमय है, आनन्दमय है, वास्तविक है और मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य हैं।

इस प्रकार का तथ्य निरूपण फरीद ने इस्लाम अथवा सूफीमत के सिद्धांतों का सहारा लेकर नहीं किया। यह जीवन की यथार्थता है, सच्चाई है, वास्तविकता है और फरीद ने इस सच्चाई की पहचान अपने अनुभवों की आँखों से की थी और झेली थी। प्राचीन काल से अनेकों साधक, तपस्वी एवं विचारक संसार के इस मिथ्यात्व का निरूपण करते रहे हैं। भारतीय दर्शन में इस प्रकार के चिंतन की प्रबल परम्परा है। अतः, तत्त्व चिंतन की दृष्टि से इसमें फरीद की कोई विशेष मौलिकता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, यद्यपि जिस सहजता, सरलता एवं मार्मिकता से उन्होंने इन तथ्यों का निरूपण किया है, वह अतुलनीय हैं।

---

89. बाट हमारी खरी उडीणी।
खनिअहु तिखी बहुतु पिईणी। 4। सूही राग

90. राग सूही ललित 12
बोले सेख फरीदु पिआरे अलह लगे।
इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर धरे। राग आसा —1

फरीद के इन विचारों को कुछ लोगों ने 'निराशावादी' कहा है। लेकिन, यह उचित नहीं है, क्योंकि ऐसा सोचकर फरीद निष्क्रियता को प्रश्रय नहीं देता, वरन् ईश्वरीय प्रेम एवं शुभ सात्विक कर्मों के लिए प्रेरित करता है। उसमें सांसारिक आकर्षणों के प्रति उनकी अवास्तविकता के कारण एक प्रकार की उदासीनता है, विरक्ति है, और इनके प्रति वैराग्य उत्पन्न करने के लिए, आत्मा को जगाने के लिए तथा ईश्वरीय अनुराग को और दृढ़ करने के लिए ही इन तथ्यों का निरूपण इतनी विशदता से करता है। इस निरूपण में फरीद भारतीय दर्शन से अत्यधिक प्रभावित जान पड़ते हैं। मध्ययुग में उत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन के अन्तर्गत जिस निर्गुण भक्ति की धारा का अभ्युदय हुआ उसमें लगभग सभी संतों ने संसार और शरीर की नश्वरता का प्रतिपादन इसी रूप में किया है। सिक्ख-गुरुओं ने भी इसी मत का निरूपण किया है।

कर्मफल

फरीद ने कर्मफल में भी अपनी आस्था प्रकट की है। इस्लाम की मान्यता है है कि 'अल्लाह समस्त संसार के ऊपर दृष्टि रखता है। वह अपने न्यायासन पर बैठ कर बुरे कर्म करने वालों को दण्ड देता है और अच्छे कर्म करने वालों की रक्षा करता है और उन्हें पुरस्कृत करता है[91]।' सूफियों ने भी शुभ कर्मों के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। फरीद का कथन है कि बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति की वही दशा होती है जो कपास, तिल, ऊख, कागज, हांडी अथवा कोलों की होती है।'[92] "प्रत्येक व्यक्ति को दरगाह में अपने कर्मों का हिसाब देना होगा" (श्लोक 98)। बुरे कर्म करने वाले को आगे कोई स्थान नहीं मिलेगा, उसे दरगाह में शर्मिन्दा होना पड़ेगा[93] और उसे सज़ा मिलेगी। मनुष्य को अपने कर्मों के अनुरूप ही फल मिलना है। कीकर बोकर अंगूर की तथा ऊन को कतवा कर रेशम की प्राप्ति की इच्छा करना व्यर्थ है[94]। इसलिए बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि प्रत्येक कर्म करने से पूर्व उसके भले या बुरे की परख कर लें और बुरे कर्म न

---

91. सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ 250
92. श्लोक संख्या 49
93. फरीदा जिनी कमी नाहि गुण के कंमड़े विसार।
    मतु सरमिदा थीवही साई दें दरबार। 59
94. फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु।
    हंढै उन कताइदा पैधा लोड़ै पटु। 23

करें,[95] क्योंकि अन्ततः अच्छे कर्म ही दरगाह में काम आएंगे[96]।

इस प्रकार फरीद ने एक सच्चे दरवेश की भाँति मनुष्य को बुरे कर्मों के त्याग एवं अच्छे कर्मों के करने की प्रेरणा दी है।

भारतीय अध्यात्म-परम्परा में भी प्रायः सभी चिंतकों ने कर्मफल में विश्वास प्रकट किया है और शुभ सात्विक कर्मों की प्रेरणा दी है। गीता में भी कर्म के महत्त्व का निरूपण हुआ है।

साधना मार्ग

फरीद की साधना के तीन पक्ष हैं :—

1. इस्लामी शरह् का पालन
2. सूफी प्रेम मार्ग
3. सदाचार

सूफियों में एक वर्ग ऐसा था, जो ईश्वरीय प्रेम के साथ-साथ इस्लाम की शरह् का भी पालन करते थे। इन लोगों ने शरीअत से सम्बन्धित नमाज़, रोज़े, ज़ुकात, हज्ज, कुरान-पाठ, बंदगी, रज़ा, ज़िक्र, रिज़क, तवक्कुल आदि में भी निष्ठा प्रकट की है।

एक ओर अरवाग़ुसफा, या गज़ाली जैसे सूफियों की भांति फरीद (ईश्वर-प्राप्ति के लिए) प्रेममार्गी है और दूसरी ओर इस्लामी शरीअत में कुछ सीमा तक उसका विश्वास है, तथापि यह उनकी आस्था का मुख्य तत्त्व नहीं है, उनमें प्रेम-साधना ही मुख्य है।

फरीद ने शरह् की पाबन्दी का पालन करते हुए नमाज़, रोज़े, आदि में अपनी आस्था प्रकट की है। इस्लाम के अनुसार 'नमाज़' अल्लाह् की प्रार्थना है, और सूफियों के अनुसार नाम-संकीर्तन जिससे परमात्मा का विरह् जगाया जा सकता है। फरीद की आरम्भ से ही नमाज़ पढ़ने में रुचि थी। उनकी माता से भी उन्हें निरन्तर यह प्रेरणा मिलती रही थी। नमाज़ उनके लिए प्रभु की प्रार्थना है। उन्होंने एक कट्टरपन्थी मुसलमान की तरह नमाज़ में आस्था प्रकट की है और

---

95. फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेखु।
आपनडे गिरीवान महि सिरू नीवां करि देखु। 6

96 अमल जि कितिआ दुनी विचि से दरगाह उगाहा। 94

— — —

फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगाहि आए कंमि। 100

जो नियमानुसार नमाज़ नहीं पढ़ता उसे कुत्ता तक कह दिया है[97]। वैसे तो वे पाँचों वक्त की नमाज़ का महत्त्व प्रतिपादित करते हैं तथापि रात्रि के पिछले प्रहर की नमाज़ को (फज़र की नमाज़) सर्वश्रेष्ठ माना है[98]। मसीत (मस्जिद) में भी उन्होंने अपनी निष्ठा व्यक्त की है[99]। जहाँ तक रोज़ों का सम्बन्ध है, ऐसा माना जाता है कि वे जीवन-भर रोज़े रखते रहे। 'राहतुल कलूब' एवं 'जवाहिर फरीदी' से भी इसका समर्थन होता है[100]। लेकिन उनकी वाणी में कहीं इसकी चर्चा नहीं हुई। 'हज्ज' भी उन्होंने कई बार किया। किन्तु, उनकी वाणी में उसका भी वर्णन नहीं है। 'कुरान' के पाठ की चर्चा भी उन्होंने अपनी वाणी में नहीं की, यद्यपि कहा जाता है कि कुरान उन्हें कंठस्थ था। ईश्वर की 'बंदगी' करने का प्रतिपादन उन्होंने अवश्य किया है[101]। इसके अतिरिक्त रज़ा (हुकम)[102] ज़ुकात (दान)[103], तवक्कुल (भरोसा)[104], सबर, (सन्तोष)[105], शुकर[106] आदि की कुछ अवस्थाएँ भी उनकी वाणी में मिलती हैं, पर साधारण रूप में। इन में से रज़ा (ईश्वराज्ञा), ज़ुकात (दान), सबर (सन्तोष), शुकर (कृपा) आदि कुछ ऐसे तत्त्व हैं, जिनका भारतीय धर्म-साधना में भी समान रूप से महत्त्व स्वीकृत है। वस्तुत:, शरीअत के फराइज़ (कर्त्तव्य) में से फरीद (उनकी वाणी में) की आस्था नमाज़ में ही अधिक दिखाई पड़ती है, जिसका प्रतिपादन उन्होंने दृढ़ता और पूर्ण निष्ठा से किया है। कुछ विद्वानों का मत है कि "इनके अनेक श्लोकों

---

97. (क) उठ फरीदा उजु साजि सुब्रह निवाज गुजारि।
जो सिरू सांई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥
(ख) फरीदा बेनिवाजा कुतिग्रा एह न भली रीति।
कबही चलि न आइग्रा, पंजे वखत मसीति। 70

98. (क) पहिले पहिरै फुलडा फलु भी पछा राति।
जो जांगनि लहनि से सांई कंनो दाति। 112
(ख) श्लोक संख्या 107, 113

99. श्लोक संख्या 70

100. पंजाबी दुनिया—फरीद ग्रंक, पृष्ठ 169

101. (क) जोसिरु सांई न निवै सो सिरु कीजै काई। 72
(ख) ग्राखा सेखा बंदगी चलणु ग्रजु कि कलि। 97
(ग) सेख फरीदे खैर दीजै बंदगी

102. (क) ग्रलहु भावै सो भला तां लभी दरवारू ॥
(ख) जिधरि रब्ब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे। 84

103. श्लोक संख्या 24

104. श्लोक संख्या 125

105. श्लोक संख्या 28, 29, 115, 117

106. तेरी पनह पर खुदाइ तू वखसंदगी.

का भाव कुरान की आयतों अथवा हदीसे मुहम्मदी के निकट है, किन्तु कुछ में टकराहट भी है[107]। इस्लाम के प्रचार को भी शरीअत के अनुसार सच्चे मुसलमान का एक धार्मिक कर्त्तव्य समझा जाता है। फ़रीद जीवन-भर इस्लाम का प्रचार करते रहे और उन्होंने अपने जीवन में हजारों लोगों को मुसलमान बनाया।

इस्लामी शरह में आंशिक रूप से विश्वास रखते हुए भी फ़रीद ने ईश्वरीय प्रेम को ही सर्वश्रेष्ठ साधना माना हैं। सूफियों के लिए प्रियतम का प्रेम ही सब कुछ है। प्रेम के द्वारा ही वह असत्-पर विजय प्राप्त करके परम-सत्ता का साक्षात्कार करता है। प्रसिद्ध सूफी शिवली का कथन है "कि प्रेम हृदय में अग्नि के समान है जो परमात्मा की इच्छा के सिवाय अन्य सभी इच्छाओं को जला कर भस्मीभूत कर देता है[108]।

सूफी साधकों ने अपनी साधना की कुछ मंजिलें एवं अवस्थाएं मानी हैं। उनकी संख्या एवं स्वरूप आदि के सम्बन्ध में विदेशी एवं भारतीय सूफियों के विचारों में पर्याप्त मतभेद है। किसी ने उबूदिय्यत, इश्क, जुहद, मारिफत, बजद, हकीकत, वस्ल की सात मंजिलें मानी हैं, तो किसी ने, 'तौबो" को पहली मंजिल, कहां है और फक्र, जुहद, रोजा आदि को अन्य मुकामात माने हैं[109]। तौबा, फक्र जुहद एवं तवक्कुल की मंजिलें फरीद में भी हैं। सूफियों की साधना की चार अवस्थाएँ प्रसिद्ध हैं: शरीअत, तरीकत, मारिफत एवं हकीकत। इन्हें आध्यात्मिक ज्ञान की स्थितियां भी कहा गया है। 'शरीअत' में मनुष्य ईश्वर की सत्ता से प्रभावित होकर उसके भय से भयभीत और वैभव से विस्मित होता है। 'तरीकत' में विवेक की प्राप्ति होती है। जिससे मनुष्य भले-बुरे, ऊंच-नीच एवं कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को पहचानने लगता है। 'हकीकत' के द्वारा मनुष्य विश्व-सत्ता की वास्तविकता को पहचानता है। 'मारिफत' ज्ञान की वह स्थिति है, जिससे ईश्वर को वह सत्य रूप में जानता है[110]। साधना की दृष्टि से प्रथम दो कर्मकाण्ड प्रधान हैं, वे बेशरह सूफियों के काम के नहीं, किन्तु फरीद में बाशरह' सूफियों की भाँति वे विद्यमान हैं। परमात्मा के प्रति विरह आदि के प्रसंगों में मारिफत का भी अंश फरीद में है, किन्तु हकीकत की जो 'हक' की अवस्था है, इसका फरीद में अभाव है।

फरीद जीवन भर साधक रहे और हृदय से परमात्मा से प्रेम करते रहे,

107. पंजाबी दुनियां—फरीद अंक, पृ० 70-71
108. सूफीमत साधना और साहित्य, पृ० 330
109. वही, पृ० 329
110. वही, पृ० 43

उनके ईश्वरीय प्रेम के दो पक्ष हैं—ईश्वर का स्मरण करना (जिक्र) जिसका सूफीयत में महत्त्वपूर्ण स्थान है तथा परमात्मा के प्रति प्रणय-भाव का प्रदर्शन। परमात्मा के साथ 'एकत्व प्राप्त करने को ही वे मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मानते थे, जिसकी प्राप्ति, प्रेम के द्वारा ही संभव है। इसलिए उन्होंने प्रेम को सर्वश्रेष्ठ साधन माना है।

उनके अनुसार, "सच्चा वही है जिसका परमात्मा से हार्दिक प्रेम हैं और जो परमात्मा के प्रेम में लवलीन है, वही उसके दर्शन कर सकता है, पर जिन्होंने उसका नाम विस्मृत कर दिया है, वे भू-भार है[111]।" जिसे यह प्रेम-प्याला मिल गया उसका जग में आना सफल है [112] और जो इससे वंचित रहते हैं, उनके मुख डरावने लगते हैं, यहाँ वे दुखी रहते हैं और आगे भी उन्हें आश्रय नहीं मिलता[113]। अस्तु, प्रेम ही उनकी साधना का केन्द्र-बिन्दु है। प्रभु का प्रेम-रस सभी रसों से मधुर है, वह शक्कर, खांड, मिसरी, गुड़, शहद, भैंस के दूध से भी अधिक मीठा है[114]।

इस प्रियतम के सौन्दर्य का चित्रण सूफियों ने बड़े उत्साह से किया है। फरीद ने भी उसे पक्की खजूरों एवं मधु की बह रही नदी के समान कहा है[115]। उसके प्रेम के बिना कितनी ही जवानियाँ कुम्हला कर सूख जाती है[116]। फरीद की धारणा है कि प्रभु का प्रेम सच्चा और हृदय से होना चाहिए, अन्यथा सारा साज-श्रृंगार व्यर्थ है। आंतरिक प्रेम कस्तूरी की सुगन्ध के समान होता है [117]। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध सूफी अनुअबदला अल कुरेशी का कहना है कि 'सच्चे प्रेम का मतलब है कि तुम जिस परम प्रियतम से प्रेम करते हो, उसे सब कुछ जो

---

111. दिलहु मुहबति जिनै सेई सचिआ ॥
जिनि मनि होरु मुखि होरु सि कांढ़े कचिआ।
रत्ते इशक खुदाई रांगे दीदार के।
विसरिआ जिन नाम ते भोई भारु थीए। 1। रहाउ (राग आसा)
112. तिन धंनु जणेदी माउ आए सफुल से ॥
113. फरीदा तिना मुख डरावणे जना विसारिओ न नाउ।
ऐथे दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ। 106
114. फरीदा सकर, खंडु, निवातु, गुडु, माखिउ मांझा दुधु।
सभे वसतू मिठीआं रब न पूजनि तुधु। 27
115 फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नदी वहंनि। 99
116 जोवन जांदे न डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
फरीदा किती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाई। 34
117. नाती धोती संबही सुती आइ नचिंदु.
फरीदा रही सु बेड़ी हिङु दी गई कथूरी गंध। 33

तुम्हारे पास है दे दो, जिससे तुम्हारा कहने को कुछ भी नहीं रह जाए[118]' फरीद में आत्म-समर्पण की यह भावना भरपूर विद्यमान है।

फरीद की धारणा है कि यह प्रेम उसकी कृपा से ही प्राप्त होता है। सभी सूफी यह मानते हैं कि जब तक भगवत् कृपा नहीं होती, साधक के हृदय में प्रेम नहीं होता[119]।

प्रणयानुभूति

जायसी, मंझन, कुतबन आदि हिन्दी के सूफी कवियों में साधक पुरुष रूप में आया है तथा परमात्मा स्त्री रूप में। जबकि बुल्लेशाह, हाशिम आदि पंजाबी कवियों ने साधक को स्त्री के रूप में तथा परमात्मा को पुरुष के रूप में चित्रित किया है। फरीद ने भी परमात्मा को 'कंत', 'सहु' आदि के रूप में तथा स्वयं को स्त्री के रूप में चित्रित किया है। फरीद का कथन है कि घर चाहे ससुर का हो अथवा पिता का, उनकी जीवात्मा रूपी पत्नी तो उसी कंत की है, जो अगम एवं अनन्त हैं। प्रेम की यह पद्धति भारतीय परम्परा के अनुकूल है।

फरीद की प्रणय अनुभूति में पूर्ण आस्था, दृढ़ता, पवित्रता एवं स्वच्छता है। उनमें आत्म-समर्पण अथवा आत्मोत्सर्ग की भावना है। उनमें एक सामान्य भारतीय रमणी की भाँति प्रिय से मिलन की उत्कंठा, उत्सुकता एवं बेचैनी है। "मूसलाधार वर्षा हो रही है, गली में कीचड़ है, प्रिय का घर भी दूर है, जाने से वस्त्र भीगते हैं और न जाने से प्रेम टूटता है। फरीद प्रियतम को मिलने के लिए सभी कष्ट सहने को तैयार हैं। अतः, चाहे उनके मारे वस्त्र भीग जाएँ, कंबली भी गीली हो जाए, वर्षा होती है, होती रहे, वे उस प्रियतम को जाकर अवश्य मिलेंगे ताकि प्रियतम से प्रेम न टूटने पाए[120]।

यहाँ प्रेमिका प्रेमी से मिलने को उत्सुक तो है, पर फरीद ने जायसी की भाँति स्त्री-पुरुष के प्रणय-व्यापार में कहीं भी ऐन्द्रिय एवं स्थूल चित्रण नहीं किया। सूफी कवि लौकिक प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम का शक्तिशाली माध्यम मानते हैं किन्तु फरीद में यौन-सम्बन्धों का उद्दाम वेग नहीं है और न ही उन्होंने संयोग अवस्था के कामोत्तेजक एवं अश्लील दृश्यों का वर्णन किया है। फरीद की प्रेम-साधना विरक्तिमूलक है, वह वैभव-ऐश्वर्य, मोह-माया, विषय-

---

118 सूफी मत : साधना और साहित्य, पृ० 377

119. सूफीमत : साधना और साहित्य, पृ० 314

120. फरीदा गलीएं चिकड़ दुरि घर नालि पिआरे नेहु।
चलो त भिजै कंबली रहां तां तुटै नेहु ।।24 ।।
भिजउ सिजउ कंबली अलह बरसउ मेहु।
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ।।25

वासना एवं शारीरिक सुखों के त्याग की भावना से परिपुष्ट होती है । भारतीय प्रेम-साधना के अनुरूप उसमें शांति, कोमलता एवं स्निग्धता है; उसमें अन्य सूफ़ी साधकों की भाँति उद्विग्नता, उग्रता, प्रचण्डता नहीं; वैसा उन्माद और मस्ती भी फरीद में नहीं है।

सूफियों की प्रणय भावना में विरह का अत्यधिक महत्त्व है। फरीद ने भी विरह की महत्ता का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार वियोग-पीड़ा सभी भावनाओं में शिरोमणि है क्योंकि जिस शरीर में विरह व्याप्त नहीं होता वह मृतक समान है[121]। फरीद में प्रभु से मिलने की तड़प है, विरह की वेदना है, पीड़ा है न मिल पाने के कारण दु:ख है, बेचैनी है, व्याकुलता है, अधीरता है। फरीद ने प्रिय मिलन की आकांक्षा को, प्रिय के दर्शनों के लिए तड़पती अपनी आत्मा की विरह-वेदना को लोक गीतों की पद्धति का अनुसरण करते हुए अत्यन्त मार्मिकता से अभिव्यंजित किया है। काग को सम्बोधित करते हुए वे कहते हैं—

"हे मेरे शरीर को नोचने वाले काग, भले ही तू मेरे शरीर का सारा मांस खा जा, पर मेरी ये दो आंखें न खाना, क्योंकि मुझे अभी भी प्रियतम के दर्शनों की आशा है"[122]। हे काग ! तू मेरे हृदय को मत नोच क्योंकि इस पिंजरे में मेरा प्रियतम रहता है, उसका मांस न खा[123]।

प्रिय के प्रति कितनी निष्ठा है, प्रेम में कितनी दृढ़ता है, कितना विश्वास है, कितनी पवित्रता है और कष्ट सहने की कितनी प्रबल शक्ति है। लेकिन, दुख तो यह है कि 'प्रतीक्षा करते-करते शरीर सूख कर पिंजर बन गया है, शरीर को मृत समझ कर काग तलवों में चोंचे मार-मार कर नोच रहे हैं, पर अभी तक भी वह प्रियतम नहीं आया है। हाय मनुष्य की कैसी नियति है[124]।' प्रिय से मिलने की लालसा उनमें कितनी तीव्र हैं और उसके लिए कितने कष्ट सहने को तैयार हैं, इसका एक उदाहरण देखिये :—

तन तपै तनूर जउ बालण हड बंलनि ।
पैरी थंका सिरि जुलां जे मू पिरी मिलनि । 118

"चाहे शरीर तन्दूर की भाँति तपता रहे और शरीर की हड्डियाँ ईंधन की भाँति जलें लेकिन यदि किसी प्रकार प्रियतम मिल सके तो पाँव थक जाने पर मैं

---

121. बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ।
फरीदा जितु तनि बिरहा न उपजै सो तण जाण मसाण ।

122. कागा करंग ढढोलिआ सगला खाइआ मासु ।
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस 91

123. कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ।
जितु पिंजरै मेरा सहु बसै मासु न तिदु खाहि । 92

124. फरीदा तन सुका, पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग ।
अजै सु रबु न बाहुडिओ, देख बंदे के भाग ॥90॥

सिर के भार चलने को भी तैयार हूँ।"

"प्रियतम की प्रतीक्षा" करते-करते शरीर सूख गया है, उसमें रक्त की एक बूंद नहीं रही। चीरने पर भी रक्त का एक कतरा नहीं निकलता। जिनका शरीर प्रभु प्रेम में लवलीन हो जाता है, उनके शरीर में रक्त रहता ही कहाँ है? उसके विरह में एक 'हूक' सी उठती है, वह उपलों के चूरे की भाँति धधक रही है। (श्लोक 87)[125]। "मन में यही एक टीस है, यही एक 'दर्द' है कि वह प्रियतम के साथ नहीं सोई। शरीर का अंग-अंग शिथिल होने लगा है, पति द्वारा परित्यक्ता वियोगिनी स्त्रियों से पूछो कि उनकी रात कैसे कटती है"[126]।

इस प्रकार फरीद ने विरह में शरीर की कृशता, तपन, शुष्कता आदि का भी निरूपण किया है, किन्तु अन्य अनेक सूफियों की भाँति उनके विरह वर्णन में भी उद्विग्नता, उग्रता अथवा प्रचण्डता नहीं है। ज़मीन-आसमान को जला कर खाक कर देने वाली जलन अथवा खून के आँसू बहाने या शरीर पर जख्म करने जैसे हिंसात्मक वीभत्स कृत्यों में भी उनकी प्रवृत्ति नहीं है।

फरीद की प्रेम-साधना में 'वस्ल' तक की स्थिति के दर्शन तो होते है किन्तु, उसके आगे की अवस्था नहीं मिलती। 'हाल' अथवा भावाविष्टिवस्था 'फनाह'[127] एवं 'वका'[128] में से भी कोई भी अवस्था फरीद में नहीं मिलती। बुल्लेशाह ने हीर-रांझे के 'एकत्व' का जैसा मनोहर वर्णन किया है[129], उस स्थिति के दर्शन भी फरीद में नहीं होते। प्रेम-साधना में मस्ती लाने के लिए सूफियों में मदिरा सेवन की भी वर्जना नहीं है, किन्तु फरीद में इसका सर्वथा अभाव है। फरीद में उतनी विकलता और उन्माद भी नहीं। फरीद की प्रणय भावना का संतों की प्रणयानुभूति से अद्भुत साम्य है। दक्षिण के आलवार भक्तों में भी इसी प्रकार की प्रणयानुभूति के दर्शन होते हैं। इनकी भक्ति भी रागमयी, प्रीतिमयी भक्ति है, और उसमें प्रेम की ही प्रधानता है। प्रीतिपूर्वक आत्मदान, प्रणय का आत्म-समर्पण ही उनके गीतों का मुख्य स्वर है[130]। वैष्णव भक्त कवयित्री आंदाल भी मीरा की तरह प्रेम पुजा-

---

125. फरीदा रती रतु न निकले, जे तनु चीरे कोई।
जो तन रतै रब्ब सिउ तिन तनि रतु न होइ। 51

126. अजु नें सुती कंत सिउ अंग मुड़े मुड़ जाइ।
आइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि बिहाइ। 30

127. 'फना' में स्वात्म ज्ञान तिरोहित हो जाता है, अहं की चेतना नहीं रह जाती, आकांक्षाओं का अवसान हो जाता है।

128. परमात्मा के साथ एकमेव होकर वास करने की स्थिति 'वका' है।

129. रांझा रांझा करदी नी मैं आपे रांझा होई।
आखो नी मैं नूँ धीदो रांझा हीर न आखो कोइ।

130. राम-भक्ति साहित्य में मधुर उपासना पृ० 4-5 डा० भुवनेश्वर नाथ मिश्र, माधव.

रिन थी। प्रसिद्ध सूफी राबिया और वैष्णव भक्त कवयित्री आंदाल की प्रणय-अभिव्यक्ति में भी पर्याप्त समानता है। वस्तुतः, मिलन की उत्कंठा, प्रेम की तड़प, वियोग की तीव्रानुभूति सभी रहस्यवादी मधुरोपासना के कवियों में समान रूप में पाई जाती है[131]।

सदाचरण

हृदय में ईश्वर के सच्चे प्रेम को प्रतिष्ठित करने के लिए विषय-वासनाओं, काम-क्रोध, लोभ-मोह, अहंकार आदि के त्याग से स्वच्छ करना परम आवश्यक है तथा सत्य, संतोष, सदाचरण, तपस्या आदि के द्वारा उसे उदात्त बनाना होता है, तभी सच्चा प्रेम सम्भव है। प्राचीन यूनानी सदाचार को बड़ा महत्त्व देते थे। सूफियों ने भी सात्विक स्वच्छ जीवन पर और सदाचरण पर बहुत बल दिया है। उनकी मान्यता है कि मनुष्य में परम सत्ता का भी अस्तित्व है और क्षणभंगुर सृष्टि का भी। उसमें सत् और असत् दोनों विद्यमान है, अच्छाई और बुराई दोनों हैं। वह असत् है जो बुराई हैं। जो अच्छाई है वह सत्य है। उसका सत् तत्त्व इस बात की सतत् चेष्टा करता है कि वह अपने उद्गम स्थल पर लौट चले, पर असत् तत्त्व इसे कृतार्थ नहीं होने देता। इसलिए साधक की सबसे बड़ी साधना यह होती है कि वह अपने इस असत् तत्त्व 'अहं' के ऊपर विजय प्राप्त करे[132]।

सूफियों का विश्वास है कि 'जिसने अपने समस्त कलुष को धो नहीं डाला है और जिसने सांसारिक वस्तुओं के प्रलोभन को त्याग नहीं दिया है उसे इस प्रेम को पाने का अधिकार नहीं[133]। सूफी साधक साधना के पथ पर अग्रसर होने के लिए अपनी बुराइयों का त्याग करता है, अपनी आत्मा के कलुष को मिटा कर इस मार्ग पर अग्रसर होता है[134]। सूफियों की 'पूर्ण मानव' (इन्सानुल कामिल) की परिकल्पना भी इसी धारणा पर आधारित है। पूर्णमानव ही ईश्वर की एक मात्र अभिव्यक्ति है। उनके अनुसार मानव की पूर्णता ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।[135] ऐसा मनुष्य अपनी बुराइओं को ही दूर करने में संतोष नहीं करता वरन् संसार के प्राणियों के दुख दूर करने की भी यथासाध्य चेष्टा करता है[136]।

---

131. वही, पृ० 4
132 सूफीमत साधना और साहित्य—पृ० 245
133. वही, पृ० 315
134. सूफी साधना और साहित्य, पृ० 327
135 वही, पृ० 273, 25, 26.
136. वही, पृ० 11

पूर्णमानव (इन्सानुल कामिल)

फरीद ने अपनी कविता में इस प्रकार के पूर्ण मानव (इन्सानुल कामिल) की प्रतिष्ठा की है और उस स्थिति को प्राप्त करने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है उन्हें अपनी साधना का अपरिहार्य अंग बनाया है। फरीद ने शरीर की सुन्दरता, यौवन, वैभव, मान-प्रतिष्ठा आदि से संबंधित अहंकार[137], सांसारिक सुख-विलास एवं विषय-वासनाओं को[138], मोह-माया[139], क्रोध[140], लोभ[141], शंका[142], असत्य, कटु वचन[143], आदि को त्यागने और सत्य[144], संतोष[145], विनम्रता-दैन्य[146], परोपकार[147], क्षमा, सहनशीलता[148], मधुरवचन[149] एवं अहिंसा[150] आदि को ग्रहण करने पर अत्यधिक बल दिया है।

फरीद का जीवन दरवेशी का जीवन था और उनकी कविता दरवेशी की कविता हैं। दरवेशी का जीवन बड़ा ही कठिन जीवन होता है, लेकिन जब एक बार उस मार्ग पर चल ही पड़े, तो फिर उस गठरी को फेंक कर अब वे कहां जाते।[151] फरीद ने अपनी कविता में सात्विक-स्वच्छ, संतोषी एवं सदाचारी जीवन की महत्ता का प्रतिपादन किया है। 'वे उन पक्षियों के जीवन को धन्य समझते थे जो कंकर-पत्थर खाकर तथा जंगल में रह कर निर्वाह कर लेते हैं और प्रातःकाल ईश्वर का नाम स्मरण करते हैं[152], इसी प्रकार मनुष्य को भी वे रूखी-सूखी खाकर सबर करने की प्रेरणा देते हैं। उसे दूसरों की चोपड़ी देखकर ललचाना नहीं

---

137. श्लोक संख्या 14, 16, 17, 24, 44, 45, 46, 56, 58, 67, 77, 97, 127

138. श्लोक संख्या 10।

139. श्लोक संख्या 93 आसा राग।

140 श्लोक संख्या 78 (फरीदा बुरे दा भला करि, गुसा मनि ना हढ़ाई)।

141. श्लोक संख्या 18 (फरीदा जा लबु (लोभ) ता नेहु किआ, लड त कूड़ा नेहु)

142. श्लोक संख्या 60।

143. श्लोक आसा 3।

144. श्लोक संख्या 1029।

145. बोलिए सचु धरमु झूठ न बोलिए।

146. श्लोक 28, 29 115, 116, 117,

14 . श्लोक 7, 126, 127

148. श्लोक 60, 127

149. श्लोक 129

150. श्लोक 129

151. फरीदा दर दरवेशी गाखड़ी चलां दुनीआं भति.
बंनि उठाई पोटली किथै वंञा घति। 2

152. हउ बलिहारी तिन पंखीआ जंगलु जिना वासु.
कंकर चुगन थलु वसनु रब्ब न छोड़ू पास।101।

चाहिये[153] संतोष मनुष्य की पूर्णता की सिद्धि में सहायक होता है। मनुष्य के स्वभाव में संतोष का समावेश होने से वह समुद्र के समान गंभीर हो जाता हैं[154]। उसके विकारों का नाश हो जाता है और वह परमात्मा के निकट आता जाता है[155] सबर की कमान पर सबर का तीर लेकर सबर की प्रत्यंचा चढ़ाने से मनुष्य का निशाना कभी नहीं चूकता[156]। फरीद के मतानुसार— विनम्रता, क्षमा तथा मीठे वचन बोलना भी ऐसे श्रेष्ठ गुण हैं, जिनको ग्रहण करने से मनुष्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता हैं और प्रियतम को वश सें कर सकता है[157]। वे धूलि को भी निन्दनीय नहीं मानते। उससे बड़ा कोई नहीं है; वह सभी के पांव के नीचे आती है[158]। परोपकार, अहिंसा, सहनशीलता की महिमा का वर्णन करते हुए फरीद कहते हैं कि "मनुष्य को उनका भी भला करना चाहिए, जो उसका बुरा करते हैं और जो उसे मुक्का मारते हैं उनके भी पाँव चूम कर अपने घर जाना चाहिए[159]। फरीद की इस भावना से पुराणों के 'विष्णु-भृगु' प्रसंग की स्मृति ताज़ा हो जाती है, जब विष्णु अपने पर पद-प्रहार करने वाले भृगु के भी चरणों को सहलाने लगते हैं। फरीद ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'किसी के भी साथ फीके वचन मत बोलो, किसी का भी दिल मत दुखाओ, क्योंकि सभी के हृदय में वह परमात्मा निवास करता है, सभी जीवों के मन मोतियों की भाँति अमूल्य हैं, इसलिए किसी का दिल

153. फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ।
जिना खाथी चोपड़ी घणे सिहणुगे दुख: 124
रूखी सूखी खाई कै ठंडा पानी पीउ ।
फरीदा देखि पराई चोपड़ी न तरसाउ जीउ ।

154. सबरू एहु सुआउ, जे तूं बंदा दिड़ु करहि ।
वधि थीवहि दरीआउ, टूटि न थींवहि वाहड़ां । 117

155. सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेनि ।
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि । 116

156. सबर मंझ कमाणए सबरू का नीहणो ।
सबर संदा वाणु खालकु खता न करी ।115

157. कवणु सु अखरू कवणु गुणु कवणु सुमणीआ मंतु ।
कवण सवेसो हउ करी, जितु वसि आवै कंतु ।126
निवणु सु अखरू खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ।
एतै भणे वेस करि ता वसि आवी कंतु । 127

158. फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेड न कोई ।
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होई । 17

159. फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि ना हढाइ । 78
फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिना न मारे घुमि ।
आपनड़ै घरि जाईए पैर तिना दे चुमि । 7

तोड़ना अच्छा नहीं। यदि परमात्मा को मिलने की इच्छा है तो किसी भी मनुष्य का मन न दुखा[160]" । आध्यात्मिक चेतना के विकास के लिए मानवीय प्रेम का यह आग्रह मानवीय पूर्णता प्राप्त करने का एक अद्वितीय प्रयोग है, जिसका फरीद ने प्रतिपादन ही नहीं किया, वरन् इसे अपने जीवन में और अपने आचरण में भी स्थापित किया। उन्होंने सादी वेष-भूषा, रहन-सहन, खानपान के सहज सात्विक दरवेशी जीवन को ही श्रेष्ठ कहा है[161]।

इस प्रकार फरीद ने आध्यामिक साधना के क्षेत्र में ही नहीं, व्यावहारिक जीवन में भी मनुष्यों के लिए दुर्गुणों एवं दुष्कर्मों के त्याग एवं सद्गुणों को ग्रहण करके शुभ-सात्विक कर्मों के आचरण का महत्त्व स्वीकार किया है। वस्तुतः, फरीद ने मनुष्य की आध्यात्मिक चेतना के विकास के साथ-साथ लौकिक स्तर पर भी मनुष्य के उन्नयन एवं परिमार्जन का सफल प्रयास किया है। एक साधारण मनुष्य एक अच्छा इन्सान कैसे बन सकता है, एक सामान्य सांसारिक व्यक्ति 'पूर्णमानव' की स्थिति को कैसे पहुँच सकता है, इसका भी निरूपण किया है। सात्विक लोक व्यवहार एवं सदाचार उनकी आध्यात्मिक साधना का एक अभिन्न अंग है। धर्म को उन्होंने मनुष्य के व्यावहारिक जीवन में प्रतिष्ठित किया और मनुष्य को सही धार्मिक जीवन की पहचान देकर मानवीय विकास के मार्ग को प्रशस्त किया। सदाचारी एवं सात्विक पवित्र जीवन के महत्त्व का निरूपण फरीद ने सारांश में इस प्रकार किया —

आपु सवारहि मैं मिलहि, मैं मिलिआ सुखु होए । 95

'नफ्स' पर विजय पाने के लिये फरीद ने मन के निरोध पर; तथा उसे समतल मैदान की भाँति स्वच्छ करने पर भी बल दिया है[162]। फरीद जंगल में जाकर तप करने के पक्ष में तो नहीं है[163] लेकिन तपस्या के महत्त्व को उन्होंने भी स्वीकार किया है। उन्होंने ईश्वर की प्राप्ति की चेष्टा में तप-तप कर तड़प-तड़प कर हाथ

---

160 इकु फिका ना गालइ सभना मै सचा धणी।
हिआउ न कैही ढाहि माणक सभ अमोलवो । 129

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ।
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कहीदा । 130

161. फरीदा दरवेशी गाखड़ी चोपड़ी परीति।
इकनि किनै चलीऐ दरवेसावी रीति । 118
फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कबंलडी पहिरेउ ।
जिनी वेसी सहु मिलै सेइ वेस करेउ । 103

162 फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि । 74

रे मन गाहिले बावले माणहि किआ रलीआं । 55

163. फरीदा जंगलु जंगल किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ।
वसी रब हिआलीए जंगलु किमा ढूंढेहि । 19

मलने, शरीर को तंदूर की तरह तपाने, हड्डियों को ईंधन की तरह जलाने तथा शरीर के सूख कर पिंजरा होने की ओर भी संकेत किया है[164]। दरवेशी के गुणों को ग्रहण करके त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करने की जिस प्रकार से फरीद ने प्रेरणा दी है, उससे स्पष्ट है कि वे 'संन्यास' के महत्त्व को भी स्वीकार करते थे। संन्यास का जैसा महत्त्व हिन्दू धर्म और ईसाई धर्म में रहा है, वैसा इस्लाम में नहीं रहा तथापि इस्लाम के आरम्भिक दिनों में इस्लाम धर्म के अनेक अनुयायी संन्यास व्रत का पालन करते थे[165]। गरीबी और संतोष का जीवन आदर्श समझा जाता था। त्याग और वैराग्य का महत्त्व था। सूफियों ने भी संन्यास पर काफी ज़ोर दिया है। उनकी मान्यता थी कि पवित्र जीवन में प्रभु समाया रहता है तथा फकीरी जीवन बिताने वाला बड़ा सदाचारी और निष्ठावान् व्यक्ति ही संत हो सकता है[166]। भारतीय संस्कृति एवं धर्म-परम्परा में भी संन्यास की बड़ी प्रतिष्ठा है। सांसारिक सुखों से वैराग्य धारण करके सत्य, संयम, संतोष एवं सदाचार का पालन करने वाले सन्तों-महात्माओं का यहां बहुत आदर रहा है। हमारे यहाँ वैदिक काल से लेकर अर्वाचीन काल तक 'संत' शब्द का प्रयोग इसी सामान्य अर्थ में होता रहा है। अतः, यह निश्चित करना कठिन है कि फरीद में इस प्रकार के जीवन के प्रति आस्था सूफीमत की देन हैं अथवा वह भारतीय परिवेश का प्रभाव है। फरीद ने ऐसे संतों को हंस के समान कहा है। 'संत-हंस' इस मलीन संसार में आते अवश्य हैं पर वे विषय-वासनाओं के मलिन जल का पान नहीं करते और न ही 'कोदरे' के निकृष्ट अन्न का भक्षण करते हैं। वे संसार से अलिप्त रहने की आकांक्षा करते हैं[167]। भारतीय धर्म-परम्परा में भी ऐसे सन्तों को 'परमहंस' की उपाधि से अलंकृत किया गया है और उनकी संगति एवं सेवा का महत्त्व दर्शाया गया है। फरीद ने भी ऐसे संतों की संगति के महत्त्व का प्रतिपादन किया है।" वे मनुष्य को अज्ञान एवं सांसारिक मोह-माया के प्रपंच के अँधेरे कुएँ से निकाल लेते

---

164. तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥
बावलि होई से सहु लोरउ ॥

— — —

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलानि ॥
फरीदा तनु सुका पिंजर थीआ तलीआं खूंडहि काग।
अजै सु रब न बाहुडिओ देखु बंदे के भाग। 90

165 सूफीमत : साधना और साहित्य—पृ० 20

166. वही, पृ० 334

167. कलर केरी छपडी, आइ उलथे हंझ ॥
चिंजू बोड़नि न पीवहि, उडण संदी डंझ ॥ 64
हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोक विडारणि जाइ ॥
गहला लोकु न जाणदा हंस न कोधा खाइ। 65

हैं लेकिन, ऐसे सन्तों की संगति ईश्वर की कृपा से ही मिलती है[168]।

फरीद के पूर्व से ही नाथ-सिद्ध साधक पाखंडी वेश-धारी साधुओं पर तीखे व्यंग्य-प्रहार कर रहे थे। फरीद ने भी जहाँ संत-हंस के प्रति सम्मान प्रकट किया है, वहां वेशधारी पाखंडी साधुओं की भर्त्सना की है। उन्होंने ऐसे व्यक्तियों की निन्दा की हैं, जिन्होंने वेश तो दरवेशों का धारण किया हुआ है, किन्तु हृदय में ईश्वरीय प्रेम का अभाव है, जिनकी जिह्वा गुड़ के समान मीठी हैं, पर दिल कैंची की तरह घातक है, जो बाहर से तो उज्ज्वल लगते हैं, किन्तु हृदय रात्रि के अन्धकार से परिपूर्ण है[169]।"

सूफीमत एवं भक्ति-भावना

फरीद पंजाबी के प्रथम कवि हैं जिनकी कविता में सूफी रंग उभरा है। वे "बा शरह" सूफी हैं। उनमें इस्लामी 'शरह' के भी कुछ संस्कार विद्यमान हैं और भारतीय चिंतन-धारा से भी वे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में काफी प्रभावित प्रतीत होते हैं। वस्तुतः, फरीद में समन्वय की प्रवृत्ति ही परिलक्षित होती है। उनमें इस्लाम, सूफीमत एवं भक्ति की धाराओं का संगम है। उन्होंने सभी मनुष्यों की समानता एवं मानवीयता का प्रचार किया, जीवन के शाश्वत सत्यों एवं लाभों का निरूपण किया और मनुष्य की आध्यात्मिक चेतना को जागृत करके उसे एक आदर्श इन्सान—'इन्सानुल कामिल' (पूर्णमानव) बनने की प्रेरणा दी।

पूर्व प्रवर्तित वैष्णव भक्ति परम्परा से फरीद की साधना पद्धति की यथेष्ठ समानता है। 'नारद भक्ति सूत्र' में (भक्ति) का लक्षण है—"भक्ति परानुरक्तिरीश्वरे" ना० भ० सू० 1,2

जड़ के प्रति अनुरक्ति लौकिक प्रेम होता है और चिन्मुखी प्रीति 'भक्ति' होती है। महात्म्य ज्ञान-जनित श्रद्धा ही प्रेम के संयोग से 'भक्ति' बनती है। अतः, साधक में 'दैन्य' का भाव ही भक्ति-भावना का आधार तत्त्व है। सूफी रहस्यवादी साधक परमात्मा की प्राप्ति का साधन प्रेम को मानते हैं। साधक को जब उसके सौन्दर्य एवं विभूति का ज्ञान होता है तो वह उसके प्रेम के बिना नहीं रह सकता। अतः, परोक्ष रूप से उसमें भी "दैन्य" की अनुभूति विद्यमान होती है। फरीद में भी

---

168. विघण खूही मुघं इकेली।
ना को साथी ना को वेली।
करि किरपा प्रभि साध-संगि मेली।
जा फिरि देखा ता मेरा अलहु वेली। (राग सूही—3)

169. फरीदा कनि मुसला, सूफ गलि दिलि काती गुड़ वाति।
बाहरि दिसे चानणा, दिलि अंधियारी राति। 50

भक्त-कवियों की ही भाँति दैन्य,'आत्म-ग्लानि',पश्चाताप' आदि की अनुभूति है।[170] "दैन्य" की यह अनुभूति भक्तों में 'दास्य भाव को जन्म देती है और फरीद ने इसे साहब (प्रभु) की चाकरी' के रूप में स्वीकार किया है।[171] ईश्वर के प्रति आस्था, विश्वास (तवक्कुल) एवं आत्म समर्पण की भावना भी फरीद में भक्तों के ही अनुरूप मिलती है। फरीद ने अपनी रहस्यानुभूति को पति पत्नी के प्रतीकात्मक माध्यम द्वारा व्यक्त किया है। उन्होंने स्वयं को पत्नी एवं परमात्मा को पति रूप में प्रस्तुत किया है जो भारतीय परम्परा के ही अनुकूल है। फरीद ने भक्तों की ही भाँति ईश्वरीय प्रेम के साथ-साथ उसके नाम-स्मरण को भी महत्त्व दिया है और जिस प्रकार सूफी लौकिक प्रेम को अलौकिक प्रेम की सिद्धि का माध्यम मानते हैं उसे फरीद ने ग्रहण नहीं किया। भारतीय भक्ति परम्परा में भी शरीर को ईश्वरीय प्रेम के माध्यम के रूप में स्वीकार नहीं किया गया।

सूफियों ने प्रेम के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान (मारिफ) के महत्त्व को भी स्वीकार किया है। इस ज्ञान के द्वारा ही साधक परमात्मा के दर्शन कर सकते हैं और उसका साक्षात्कार करते हुए उसके साथ एकमेव हो जाता है।[172] फरीद में भी ज्ञान की यह स्थिति विद्यमान है। उन्होंने ईश्वरीय प्रेम की सिद्धि के लिए सांसारिकता के प्रति वैराग्य के महत्त्व का भी प्रतिपादन किया है। भक्ति-भावना में भी ईश्वर के साथ एकत्व प्राप्त करने की चेष्टा होती है और भक्ति के साथ ज्ञान और विरक्ति का समन्वय भी सभी भक्त कवियों में मिलता है। तुलसीदास ने ज्ञान, विरक्ति एवं भक्ति का समन्वय बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

भक्ति-परम्परा में भक्ति के सहायक तत्त्वों के रूप में सत्य, सेवा, संतोष, अहिंसा, क्षमा-परोपकार, विनम्रता, आचरण की पवित्रता, मन-निरोध, संयम आदि के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। फरीद ने भी उन्हें यथोचित महत्त्व प्रदान किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि फरीद की कविता में निर्गुण भक्ति के

---

170. फरीदा काले मैंडे कपड़े, काला मैंडा वेस।
गुनही भरिआ मैं फिरां, लोक कहै दरवेश। 61

— — —

फरीदा दरि दरवाजे जाइ कै किउ डिठो घड़िआलु।
एहु निदोसां मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु। 39
फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेखु।
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु। 6

— — —

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी-होई भूर।
अगहु नेड़ा आइआ, पिछा रहिआ दूरि। 9

171. फरीदा साहिब दी कर चाकरी, दिल दी लाहि भरांदि।60

172. सूफीमत साधना और साहित्य—पृ० 320-21

लगभग वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं, जो परवर्ती निर्गुण भक्त कवियों में थे। अतः, फरीद को निर्गुण भक्ति-धारा का प्रवर्त्तक भी कहा जा सकता है। कबीर, रैदास, दादू आदि संत कवि उनसे काफी प्रभावित जान पड़ते हैं। सिक्ख गुरुओं ने अपनी सरस, संगीतमयी वाणी से भक्ति भावना को पंजाब में एक शक्तिशाली जन आंदोलन का रूप प्रदान किया। इस आंदोलन के विकास में फरीद का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मानवीय भावना, भारतीय अध्यात्म चिंतन एवं भक्ति-भावना से अनुरूपता के कारण ही फरीद को गुरुग्रंथ साहिब में स्थान दिया गया हैं। कबीर को छोड़कर वे अकेले मुसलमान साधक हैं जिन्हें यह गौरव प्राप्त हुआ है।

फरीद की एक विशेषता यह है कि वे पहले विदेशी मुसलमान कवि हैं जिन्होंने भारतीय परिवेश को अपनी कविता की पृष्ठभूमि प्रदान की है। सामाजिक जीवन, स्थानीय रीति-रिवाज, वस्त्राभूषण, खाद्य पदार्थों, वाद्य यंत्रों आदि के रूप में ही नहीं, बिम्ब, प्रतीक एवं उपमानों आदि के विधान में भी भारतीय संदर्भ उनकी कविता में रूपायित हैं। यही कारण है कि उनकी कविता का भारतीय लोक जीवन से तादात्म्य स्थापित हुआ और वे इतने लोकप्रिय हुए।

वाणी शेख़ फ़रीद

"जितु दिहाड़े धन वरी साहे लए लिखाइ ॥
मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखा ले आइ ॥
जिंदु निमाणी कढीए हडा कू कडकाई ॥
साहे लिखे न चलनी जिंदु कूं समझाइ ॥
जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥
आपन हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥
वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणीआइ ॥
फरीदा किडी पवंदीई खडा ना आपु मुहाइ ॥"1॥

"अर्थात, जिस दिन स्त्री रूपी जीव ने व्याही जाना है, इसने अपना साहा पहले ही निकलवाया हुआ है (मृत्यु का क्षण पूर्व निश्चित है)। उस दिन मलक उल मौत (यमराज) जिसके संबंध में पहले सुना हुआ था, आकर मुंह दिखा देता है; वह बेचारी आत्मा की हड्डियां कड़का कर शरीर में से निकाल लेता है। इसलिए हे बंदे! जीवात्मा को समझा कि लिखा हुआ साहे का क्षण (मौत) टल नहीं सकता, तब जीव रूपी वधू को यमराज रूपी पति विवाह कर ले जाएगा। मनुष्य का शरीर जब आप ही उसे विदा कर देगा, तब किसके गले लग कर रोएगा। हे शरीर! क्या तू बाल से भी सूक्ष्म सलात के सेतु के संबंध में नहीं जानता। वहां तुझे पीछे से आवाज़ें पड़ेंगी, जिनको सुन कर धोखे में मत आ जाना।"

फरीदा दर दरवेशी गाखडी चलां दुनीआं भति।
बंनि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥2॥

हे फरीद! फकीरी का मार्ग अत्यंत कठिन है। मैं तो सांसारिक रीति से चल रहा हूं। मैंने जो भी फकीरी की गठरी उठा ली है, इसको फेंक कर अब कहां जाऊं।

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी माहि।
सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हंभी दझां आहि ।।3।।

(फरीद का कहना है) कि संसार (तृष्णा की) एक गुप्त अग्नि है, यहां न तो कुछ पता चलता है न समझ आता है। मेरे प्रभु ने मेरे लिए अच्छा किया, (मुझ पर दया की), अन्यथा मैं भी इस अग्नि में जल गया होता।

फरीदा जे जाणां तिल थोडडे समलि बुकु भरी।
जे जाणा सहु नंफडा तां थोड़ा माणु करी ।।4।।

हे फरीद ! यदि मुझे ज्ञात होता कि जीवन के तिल (श्वास) थोड़े हैं, तो मैं सोच-विचार कर उनकी मुट्ठी भरती (अर्थात सोच-समझ कर जीवन व्यतीत करती)। यदि मुझे पता होता कि मेरे स्वामी (प्रिय) जवान है, तो मैं (अपने यौवन एवं सुन्दरता का) कम अहंकार करती।

जे जाणा लड़ु छिजणा पीडी पाईं गंढि।
तै जेवडु मैं नाहि को समु जगु डिठा गंढि ।।5।।

हे प्रिय ! यदि मुझे मालूम होता कि मैंने तुम्हारे साथ जो पल्लू (आंचल) बांधा है (संबंध स्थापित किया है) वह छूट जाना है, तो मैं तुम्हारे साथ पक्की गांठ बांधती, क्योंकि मैंने सारी दुनिया में घूमकर देखा है, किन्तु तुम्हारे जैसा मुझे कोई भी नहीं मिला है।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेखु।
आपनडे गिरीवान महि सिरु नीवां करि देखु ।।6।।

हे फरीद ! यदि तू सद्बुद्धि वाला हैं तो तू काले लेख न लिख (दूसरे लोगों के दुष्कर्मों को प्रकट मत कर); वरन्, तू सिर नीचा करके (विनम्र होकर) अपने आंचल में झांक कर देख (अर्थात अपने कर्मों की ओर ध्यान दे)।

फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिना न मारे घुंमि।
आपनडै घरिं जाईए पैर तिना दे चुंमि ।।7।।

हे फरीद ! जो तुझे मुक्के मारते हैं, तू उन्हें बदले में मत मार (अर्थात हिंसा की प्रतिहिंसा मत कर); बल्कि तुझे तो उनके पैर चूम कर अपने घर जाना चाहिए (अर्थात जो तुझ पर प्रहार करते हैं, उनके प्रति भी द्वेष की भावना नहीं रखनी चाहिये)।

फरीदा जा तउ खटण वेल तां तूं रता दुनी सिउ।
मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥8॥

हे फरीद ! जब (यौवनावस्था में) कमाई (ईश्वरीय प्रेम) का समय था, उस समय तो तू सांसारिक सुखों में लीन रहा; अब मौत की बड़ी खाई भर गई है (सिर पर मृत्यु मंडराने लगी है), तब तू यहां से चल पड़ा॥

देखु फरीदा जु थीआ दाडी होई भूर।
अगहु नेडा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥9॥

हे फरीद ! देख क्या हो गया है, दाढ़ी सफेद हो गई है (बुढापा आ गया है) ; इससे विदित होता है कि अब शैशव एव यौवन तो पीछे छूट गये हैं और मृत्यु सामने खड़ी है।

देखु फरीदा जि थीआ सकरु होई विसु॥
सांई बाझहु आपणे वेदण कहीए किसु ॥10॥

हे फरीद ! देख क्या हो गया है; यौवनावस्था के सुख-विलास जो शक्कर की भाँति मधुर थे अब विषैले हो गये हैं। अपने स्वामी के बिना यह पीड़ा अब और किससे कहें।

फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणिरीणे कंनि।
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंनि ॥11॥

वृद्धावस्था का चित्रण करते हुए फरीद कहते हैं; कि आंखें देख-देख कर कमज़ोर हो गई हैं; कान सुन-सुन कर खाली (बहरे) हो गये हैं। शरीर रूपी शाखा पकने लगी है और इसका रूप बदल रहा है। (जरावस्था को प्राप्त कर यह मुरझाने लगा है)

फरीदा काली जिनी न राविआ, धउली रावै कोइ।
करि सांई सिउ पिरहड़ी, रंग नवेला होइ ॥12॥

हे फरीद ! जिन्होंने यौवनावस्था में परमात्मा का स्मरण नहीं किया वे वृद्धावस्था में क्या करेंगे। इसलिए तू (यौवनावस्था में ही) परमात्मा से प्रेम कर, जिससे तुझे नया रूप-रंग (आध्यात्मिक प्रकाश) प्राप्त होगा।

फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जेको चिति करे।
आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ॥
एहु पिरमु पियाला खसम का जै भावै तै देइ ॥13॥

हे फरीद ! क्या यौवन, क्या बुढ़ापा, परमात्मा तो हर अवस्था में विद्यमान है, यदि कोई उससे प्रेम करना चाहें। लेकिन सभी की इच्छा होने पर भी परमात्मा की कृपा-दृष्टि के बिना उससे प्रेम नहीं किया जा सकता। यह प्रेम का प्याला तो उस प्रियतम का ही है, और इसे वह उसे ही देता है, जिसे देना चाहता है।

फरीदा जिन लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु।
कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥14॥

हे फरीद ! जिन (सुन्दर) नेत्रों ने (अपनी सुन्दरता से) संसार को मोह लिया था, मैंने वे नेत्र देखे हैं। जो नेत्र इतने सुकुमार थे कि काजल के भार को भी नहीं सह सकते थे, अब उन्हीं में (मरने के पश्चात) पक्षियों के बच्चे बैठे हुए हैं। अर्थात संसार की सारी सुन्दरता क्षणिक एवं नाशवान है।

फरीदा कूकेदिआं चाखेदिआं मती देदिआं नित ॥
जो शैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥15॥

हे फरीद ! बार-बार कूक-पुकार करके, ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें देकर समझाने पर और सद्बुद्धि देने पर भी जिन्हें शैतान ने सुमार्ग से हटाकर भ्रम में डाल दिया है, वे अब अपना चित्त वहां से कैसे हटा सकते हैं (कैसे सुमार्ग पर आ सकते हैं)।

फरीदा थीउ पवाही दभु जिजे सांई लोड़हि सभ।
इक छिजहि बिआ लताड़ीअहि तां साईं दे दरि वाडिअहि ॥16॥

हे फरीद ! यदि तू अपने स्वामी (परमात्मा) को सब कहीं प्राप्त करना चाहता है तो तू पांवों के नीचे आने वाली दूब की तरह (दीन एवं विनम्र) बन जा। क्योंकि यह दूब एक तो पांव के नीचे मसली जाती है और प्रताड़ित होती है, तब जाकर स्वामी के घर पहुँचती है। (दैन्य एवं विनम्रता से ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है)

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेड न कोइ।
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥17॥

हे फरीद ! धूलि (मिट्टी) की निंदा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि धूलि जैसा कोई है ही नहीं। यह जीवधारियों के पाँवों के नीचे आती है और मर जाने पर उनके सिर पर पड़ती है।

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ, लबु त कूड़ा नेहु ।
किचरु झति लंघाईए छपर तुटै मेहु ॥18॥

हे फरीद ! जहां लोभ है, वहां (परमात्मा का) प्रेम कैसे संभव हो सकता है। जब तक मन में किसी भी प्रकार का लोभ अथवा लालच है, वह प्रेम झूठा है। वर्षा के समय टूटे हुए छप्पर के नीचे कब तक निर्वाह हो सकता है।

फरीदा जंगलु जंगल किआ भवहि वणि कंड़ा मोडेहि ।
वसी रंब हिआलीऐ जंगलु किआ ढूंढेहि ॥19॥

फरीद कहते हैं कि तू जंगलों में क्यों भटकता फिरता है; और वन के कांटे रोंदता हैं। परमात्मा तो हृदय में निवास करता है, तू जंगल में क्या ढूंढ़ता फिरता है।

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूगहि भवि ओमि ।
अजू फरीदै कूजडा सै कोहां थी ओमि ॥20॥

हे फरीद ! (यौवनावस्था में तो) मैं इन छोटी-छोटी जंघाओं (चरणों, टाँगों) से बड़े-बड़े मैदान, पर्वत, घाटियाँ पार कर आया हूँ, लेकिन अब (जरावस्था में) पास में पड़ा हुआ मिट्टी का यह कटोरा (कूजा) भी सैंकड़ों कोस दूर लगता हैं। (अर्थात जरावस्था में इन्द्रियों के शिथिल हो जाने से शरीर असमर्थ हो गया है। यही प्रत्येक जीव की नियति है। अत: यौवनावस्था में ही परमात्मा से प्रेम करना चाहिए।)

फरीदा राती वडीआं धुखि-धुखि उठनि पास ।
धिग तिना दा जीविआ जिनां वडाणी आस ॥21॥

हे फरीद ! जिन्दगी की रातें बड़ी लम्बी हैं। (प्रतीक्षा में) मेरे अंग-प्रत्यंग दुखने लगे हैं। धिक्कार है उनका जीवन, जिन्हें दूसरों की आशा लगी रहती है; (और प्रिय की प्रतीक्षा में कष्ट सहने पड़ते हैं) ।

फरीदा जे मैं होंदा वारिआ मिता आइडि आं ।
हेडा जलै मजीठ जिउ उपरि अंगारा ॥22॥

फरीद कहते हैं, हे मित्र ! यदि मेरे पास कुछ (देने को) होता तो मैं उसे (मांगने) आने वालों पर न्योछावर कर देता । (यदि मैं तुमसे कुछ छिपाऊं) तो मेरा शरीर अग्नि पर मजीठ की भांति जले ।

फरीदा लोडे दाख बिज ऊरीआं किकरि बीजै जटु ॥
हंढै उन कताइदा पैधा लोडै पटु ॥23॥

हे फरीद ! जाट (कृषक) बीजता तो कीकर (बबूल) है और उससे बजौरी दाख (किशमिश) प्राप्त करना चाहता है।

प्रयोग में लाई हुई कटी-फटी पुरानी ऊन कतवा कर रेशमी वस्त्र पहनना चाहता है। (अर्थात मनुष्य को उसके कर्मों के ही अनुरूप फल मिलता है। विप-रीत फल की आकांक्षा करना व्यर्थ है)

फरीदा गलीए चिकडु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ।
चलात भिजै कंबलो रहां त तुटै नेहु ॥24॥

हे फरीद ! गली में कीचड़ फैला हुआ है; प्रियतम का घर भी दूर है, लेकिन प्रिय-तम के साथ मेरा दृढ़ प्रेम है। प्रियतम को मिलने जाने से (वर्षा के कारण) वस्त्र (कंबली) भीगते हैं और न जाने से प्रेम टूटता है।

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेंहु ।
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥25॥

यदि मेरी कंबली (वस्त्र) भीगती है तो बेशक भीग जाए। ईश्वरीय-कृपा का मेंह (वर्षा) बरस रहा है; मैं अपने प्रियतम से जा मिलूं, ताकि मेरा प्यार न टूटे। (परमात्मा के प्रेम तथा मिलन-सुख की प्राप्ति के लिए सभी सांसारिक यातनायें उन्हें स्वीकार्य हैं)

फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ।
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाहि ॥26॥

फरीद का कहना है कि मुझे अपनी पगड़ी का डर है कि कहीं यह मैली न हो जाये। यह अज्ञानी जीवात्मा यह नहीं जानता कि एक दिन उसके सिर को भी मिट्टी ने खा लेना है।

फरीदा सकर खंडु निवातु गुडु माखिउ मांझा दुधु ।
सभे वसतू मिठीआं रब न पूजनि तुधु ॥27॥

हे फरीद ! शक्कर, खांड, मिश्री, गुड़, मधु और भैंस का दूध, ये सभी वस्तुयें मीठी हैं; किन्तु हे प्रभु ! कोई भी वस्तु तेरे समान मधुर नहीं हैं।

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ।
जिन्ना खाधी चोपड़ी घणे सहिनगे दुख ॥28॥

फरीद का कहना है कि मेरी रोटी लकड़ी की है, जिससे मेरी भूख मिट जाती है।

जिन लोगों ने घी से चोपड़ी रोटियां खाई हैं, वे ही अधिक दुख सहेंगे।

अर्थात वैभव और विलास में डूबे हुए लोगों को ही अधिक दुख सहने पड़ते हैं।

रूखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ।
फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ।।29।।

रूखा-सूखा जैसा भी भोजन मिले, वह खाकर और ठंडा पानी पीकर मनुष्य को संतोष करना चाहिये। फरीद का कहना है कि दूसरों की (घी से) चोपड़ी रोटी देख कर अपने मन को दुखी नहीं करना चाहिए।

अजु न सुती कंत सिउ अंग मुड़े मुड़ जाइ ।
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ।।30।।

आज मैं अपने प्रियतम के साथ नहीं सोई, अतः मेरे अंग-प्रत्यंग टेढ़े हो गये हैं, मुरझा गये हैं।

उन विरहणियों से जाकर पूछो (जिनका प्रभु से कभी मिलन नहीं होता) कि उनकी रातें कैसे कटती हैं।

साहुरै ढोई न लहै पेईऐ नाही थाउ ।।
पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नांउ ।।31।।

जिस स्त्री को ससुराल में आश्रय नहीं है, और न ही मायके में रहने के लिए स्थान मिलता है; जिसका पति भी उसकी सुध नहीं लेता। ऐसी स्त्री अपने को सुहागिन कैसे समझती है।

साहुरै पेईऐ कंत की कंतु, अगमु अथाहु ।
नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाहु ।।32 ।।

चाहे ससुराल में हो, चाहे मायके में, जो स्त्री अपने उस पति की बनी हुई है, जो अनन्त और अथाह है, और जो उस बेपरवाह स्वामी (परमात्मा) को प्रिय लगती है, वही वास्तव में सुहागिन है।

नाती धोती संवही सुती आइ नचिंदु ।
फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी गई कथूरी गंधु ।।33।।

वह स्त्री नहा धो कर (स्नानादि करके), शृंगार करके, निश्चिंत होकर सो गई; (यह सोचकर कि मेरा प्रियतम आकर स्वयं मुझे प्रेम करेगा;) बाबा फरीद का कहना है कि वह स्त्री अंहकार रूपी हींग से भरी हुई है, और उसमें से विनम्रता रूपी कस्तूरी की सुगंध लुप्त हो गई है।

जोबन जांदे न डराँ जे सह प्रीति न जाइ।
फरीदा किती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ।।34।।

यदि मेरे अन्तर से उस प्रियतम (परमात्मा) का प्रेम समाप्त न हो, तो मुझे अपने यौवन के चले जाने का कोई भय नहीं। क्योंकि प्रेम के अभाव में कितने ही लोगों के यौवन एवं सुन्दरता सूख कर मुरझा गए (नष्ट हो गए)।

फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहु विछावन लेफु।
एह हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ।।35।।

फरीद कहते हैं कि चित्त अथवा चिंता रूपी खाट, दुख रूपी बाण, तथा विरह रूपी बिछौना और लिहाफ ही हमारी जिन्दगी है। हे सच्चे स्वामी (परमात्मा)! ज़रा इस ओर भी देखिये।

(परमात्मा के विरह से फरीद का चित्त नित्य व्याकुल एवं व्यथित है)

बिरहा-बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु।
फरीदा जितु तनि बिरहा न उपजै सो तण जाण मसाण ।।36।।

लोग विरह-विरह कहते हैं (कि यह अत्यन्त दुखदायी होता है) किन्तु (वास्तव में) (परमात्मा का) विरह तो सुलतान है, बादशाह है; सभी भावों का शिरोमणि है; क्योंकि उससे परमात्मा का प्रेम बना रहता है)। फरीद का कहना है कि जिसके शरीर में (परमात्मा का) विरह व्याप्त नहीं है, उसका शरीर शव के समान हैं।

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि।
इकि राहे दे रहि गए इकि राधि गए उजाड़ि ।।37।।

हे फरीद ! ये (सांसारिक विषय-वासनायें) ऐसी विषैली गंदलें (सरसों का साग) हैं, जिन पर खांड चढ़ी हुई है (ये देखने में मीठी हैं, किन्तु विष से भरी हुई हैं)। कई तो इन गंदलों को उबालते रह गए और कई इन गंदलों को रींझ कर, (खाकर) अपने आप को उजाड़ गए। (अर्थात कुछ लोग तो इन वासनाओं की पूर्ति करते-करते रह जाते हैं और कई इनमें लवलीन होकर अपना विनाश कर लेते हैं)

फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ।
लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केरे कंमि ।।38।।

हे मनुष्य ! तूने चार प्रहर तो लौकिक कार्य-व्यापार (काम-काज) में व्यतीत कर दिये और चार प्रहर सो कर गुज़ार दिये । फरीद का कहना है कि परमात्मा तुमसे हिसाब मांगेगा कि तू दुनिया में किस काम के लिए आया था । (तू ने संसार में आकर परमात्मा की बंदगी नहीं की) ।

फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़िआलु ।
एहु निदोसां मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु ।।39।।

हे फरीद ! क्या तुमने नगर-द्वार पर जाकर घड़ियाल (घंटा) को देखा है । इस निर्दोष को (प्रतिदिन) मार पड़ती है (घंटा बजाते समय), तब हम दोषयुक्त (गुनहगारों) व्यक्तियों की क्या दशा होगी ।

घड़ीए-घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ ।
सो हेड़ा घड़ीआल जिउ डुखी रैणि विहाइ ।।40।।

घडियाल पर हर घड़ी मार (चोट) पड़ती हैं और प्रत्येक प्रहर के बाद उस पर और भी बड़ी-बड़ी चोटें पड़ती हैं मानो उसे सज़ा (दण्ड) मिलती है । इसी प्रकार दोषी (गुनहगार) व्यक्ति भी घड़ियाल की भांति सज़ा पायेंगे औरे दुखों में उनके जीवन की रात व्यतीत होगी ।

बुढ़ा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह ।
जेसउ वरहिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ।।41।।

शेख फरीद बूढ़ा हो गया है, तथा उसका शरीर कांपने लगा है । यदि तूने सौ वर्ष और भी जीवित रहना है, तो भी अन्त में शरीर को मिट्टी ही हो जाना है । (यह शरीर क्षणभंगुर एवं नश्वर है)

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा साईं मुझे न देहि ।।
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ।।42।।

फरीद कहते हैं, हे स्वामी ! मुझे किसी दूसरे के द्वार पर न बैठना पड़े । यदि मुझे इस प्रकार रखना है, तो (इससे तो अच्छा है कि) मेरे प्राण ही ले लो ।।

(फरीद दूसरों के आश्रित रहने की अपेक्षा मर जाना अच्छा समझते हैं)

कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरू लोहारु ।
फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ।।43।।

कंधे पर कुल्हाड़ा और सिर पर पानी का घड़ा रखकर कोई लुहार जंगल में से जा रहा है। बाबा फरीद उससे कहते हैं कि मैं तो इस वन में अपने प्रियतम (परमात्मा) को खोज रहा हूं और तू है कि अंगार (लकड़ी जिससे अग्नि उत्पन्न करके कोयला बनाया जायेगा) खोज रहा है।

फरीदा इकना आटा अगला इकना नाही लोणु ।।
अगै गए सिञ्ञापसनि चोटां खासी कउणु ।।44।।

फरीद जी कहते हैं कि परमात्मा ने किसी को तो अन्न बहुत दिया है और किसी को नमक तक भी नहीं मिलता। आगे खुदा की दरगाह में जाने से पता चलेगा कि अधिक सजा किसको मिलती हैं।

पासि दमामे छत सिरि मेरी सडो रड।
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ।।45।।

(वे राजे-महाराजे) जिनके द्वार पर नगाड़े बजते थे, सिर पर छत्र झूलते थे, भेरी और ढोल बजते थे और जिनकी प्रशंसा में चारण कविताएँ करते थे, वे ही अंत में कब्रिस्तान में जा सोए और अनाथों की तरह दब गए।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेंदे भी गए।
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ।।46।।

बाबा फरीद कहते हैं कि ऊंचे-ऊंचे मकान, महल और चौबारे बनाने वाले भी मर गए। वे सब झूठा सौदा कर गए और अंत में कब्र में जा गिरे।

फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलिआ, जिंदु न काई मेख।
वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ।।47।।

फरीद कहते हैं कि गोदडी को तो (फट जाने पर) अनेक टाकियां लग जाती हैं, परन्तु ज़िन्दगी को कोई टाकी नहीं लग सकती (अर्थात मृत्यु का समय आ जाने पर जिन्दगी को बचाने का कोई उपाय नहीं है)। अपनी-अपनी बारी में सभी बुज़ुर्ग और शेख चले जाते हैं।

फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलक बहिठा आइ।
गड़ु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गिआ बुझाइ ।।48।।

बाबा फ़रीद कहते हैं दो दीपकों के जलते-जलते (अर्थात देखते-देखते) मल-

कुल-मौत (मौत का फरिश्ता) आ बठता है। वह जीवन के किले (गढ़) को ले लेता है (विजय प्राप्त कर लेता है) शरीर को लूट कर नेत्र रूपी दीपकों को बुझा जाता है।

फरीदा वेखु कपाहै जिथीआ जि सिरि थीआ तिलाह।
कमादै सर कागदै कुंने कोइ लिआहु ॥
मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनांह ॥49॥

हे फरीद ! देख, कपास के साथ क्या होता है (ये कैसे धुनी जाती है), तिलों के साथ क्या गुजरती है (वे कोल्हू में पीड़े जाते हैं)। गन्ने और कागज़ के साथ क्या बीतती है, हंडिया और कोयलों की क्या दशा होती है।

बुरे कर्म करने वाले लोगों को इसी तरह की सज़ा मिलती है।

फरीदा कंनि मुसला, सूफ गलि, दिलि काती गुड़ वाति।
बाहरि दिसे चानणा, दिलि अंधिआरी राति ॥50॥

हे फरीद ! (वह जो) पाखंडी साधु कंधे पर मूसल (उठाए फिरता है) और गले में सूफ़ (काले रंग की गोदड़ी पहने हुए हैं)। उसके हृदय में तो छुरी है और वाणी में गुड़-सी मिठास है (अर्थात बगल में छुरी मुंह में राम-राम)। जो बाहर से तो दिन की तरह ज्ञानवान और सज्जन दिखाई देता है लेकिन अंदर से अंधेरी रात की तरह कपटी और अज्ञानी है।

फरीदा रती रतु न निकले, जे तनु चीरे कोइ।
जो तन रतै रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥51॥

हे फरीद ! यदि कोई मेरे शरीर को काटे तो उसमें से रत्ती-भर भी रक्त नहीं निकलेगा।

जिनका शरीर परमात्मा के प्रेम में लवलीन हो जाता है, उनके शरीर में रक्त रहता ही नहीं।

इहु तनु सभो रतु है, रतु बिनु तनु न होइ ॥
जो सह रते आपणे तितु तनि लोभ रतु न होइ ॥
भै पइऐ तनु खीण होइ, लोभु रतु विचहु जाइ ॥
जिउ बैसंतर धातु सुधु होइ,
तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥
नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगि लाइ ॥52॥

गुरु जी का कथन है कि यह सारा शरीर रक्त का है। रक्त के बिना कोई

शरीर ही नहीं हो सकता। जो अपने प्रियतम (परमात्मा) के प्रेम में लवलीन होते हैं, उनके शरीर में लोभ का रक्त नहीं होता। परमात्मा का भय रखने से शरीर विनष्ट हो जाता हैं और अन्तर से लोभ का रक्त दूर हो जाता है (नष्ट हो जाता है)।

जैसे अग्नि में धातु शुद्ध हो जाती है, उसी प्रकार परमात्मा का भय दुर्बुद्धि की मलीनता (मैल) को नष्ट कर देता है।

हे नानक ! वे (भक्त) जन बहुत अच्छे हैं (भाग्यशाली हैं) जो परमात्मा के प्रेम के रंग में रंगे हुए हैं।

फरीदा सोई सरवर ढूढि लहु जिथौ लभी वथु।
छपड़ि ढूंढे किआ होवे चिकड़ि डुबै हथु ।।53।।

हे फरीद ! ऐसा सरोवर ढूंढ़ो, जहां कोइ वस्तु हाथ आ सके।

छप्पर (गंदी तलैया) को ढूंढ़ने से क्या लाभ। वहां तो कीचड़ ही में हाथ भरेगा।

(मनुष्य को ऐसी सुसंगति करनी चाहिए, जिससे परमात्मा के प्रेम की प्रेरणा मिले, कुसंगति से तो दोष ही प्राप्त होंगे।)

फरीदा नंढो कंतु न राविओ वड़ो थो मुई आस।
धन कूकेंदी गोर मैं तै सहु न मिला आस ।।54।।

हे फरीद ! यौवन के समय तो अपने प्रियतम (परमात्मा) से मिली नहीं और प्रौढ़ा होने पर (बड़ी आयु होने पर) प्रिय मिलन की आशा समाप्त हो गई।

स्त्री (प्रेमिका) कब्र में पड़ी पुकारती है कि हे प्रियतम ! मैं तुम से मिल न सकी।(मनुष्य यौवन में तो परमात्मा का स्मरण करता नहीं, मृत्यु के समय पश्चाताप करता है कि उसने अपनी आयु व्यर्थ में नष्ट कर दी)।

फरीदा सिरू पलिआ दाड़ी पली, मुछां भो पलीआं।
रे मन गहिले बावले, माणहि किआ रलीआं ।।55।।

हे फरीद ! सिर, दाढ़ी तथा मूछें पक गई हैं (सफेद हो गई हैं) अर्थात वृद्धावस्था आ गई है।

रे पगले अज्ञानी मन ! तू अभी भी (भोग-विलास की) रंग-रलियों में लवलीन है।

फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा, पिर नीदड़ी निवारि।
जो दूह लध गाणवे गए विलाड़ि-विलाड़ि ॥56॥

हे फरीद ! तू कितने समय तक कोठों पर दौड़ता फिरेगा (सांसारिक सुखों के लोभ और अहंकार में भटकता फिरेगा)।

परमात्मा के प्रति विस्मृति की नींद त्याग दे। तुझे ये जो गिनती के दिन मिले हुए हैं, ये (तृष्णा में) दौड़-धूप करने में ही व्यतीत हो गये हैं।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआं एतु न लाऐ चितु।
मिटी पई अतोलवी कोई न होसी मितु ॥57॥

हे फरीद ! तू कोठे, महल और मढ़ियों में चित्त मत लगा। (वैभव एवं ऐश्वर्य के मोह में न पड़)

जब तेरे ऊपर (कब्र में) अतुल (अत्यधिक) मिट्टी पड़ेगी, उस समय तेरा कोई भी मित्र नहीं बनेगा।

फरीदा मंडप माल न लाइ, मारग सताणी चिति धरि॥
साई जाइ समालि जिथै ही तउ वंञणा ॥58॥

हे फरीद ! महलों और ऐश्वर्य से मोह न कर। शक्तिशाली मृत्यु को याद रख। उस (गन्तव्य) स्थान को याद रख, जहां अन्त में तुझे जाना है।

फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसार।
मतु सरमिंदा थीवही, साँई दे दरबार॥59॥

हे फरीद ! जिन कर्मों से कोई लाभ नहीं, ऐसे कर्मों को भुला दे (जो कर्म सत्यकर्म नहीं है, वे मत कर)।

ऐसा न हो कि (दुष्कर्म करने के कारण) तुझे खुदा (परमात्मा) के दर-बार में लज्जित होना पड़े।

फरीदा साहिब दी कर चाकरी, दिल दी लाहि भरांदि।
दरवेशां नूं लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि ॥60॥

हे फरीद ! तू परमात्मा की सेवा कर, मन का भ्रम त्याग दे।

दरवेशों (फकीरों) को तो वृक्षों के समान सहनशील होना चाहिए।

फरीदा काले मैंडे कपड़े, काला मैंडा वेस।
गुनही भरिआ मैं फिरां, लोक कहै दरवेश ॥61॥

हे फरीद ! मेरे कपड़े (वस्त्र) काले और मैले हैं, मेरी वेश-भूषा भी काले

रंग की है।

मैं गुनाहों से भरा हुआ हूं, लेकिन लोग (मेरी बाह्य वेश-भूषा देखकर) मुझे दरवेश कहते हैं।

तती तोइ न पलवै, जे जलि टूबी देइ।
फरीदा जो डोहागणि रबदी, झुरे दी झूरेइ ॥62॥

पानी की जली हुई खेती कभी हरी नहीं होती, चाहे उसे पानी में डुबा कर ही क्यों न रखा जाये।

हे फरीद! जो परित्यक्ता स्त्री (अपने प्रियतम) परमात्मा से बिछुड़ी हुई है, वह (उसके वियोग में) तड़प-तड़प कर मर जाती है।

जां कुआरी तां चाउ, वीवाही तां मामले।
फरीदा ऐहो पछोताउ, वति कुआरि न थीए ॥63॥

जब कुआरी थी तो विवाह का चाव था। जब विवाह हो गया तो और कई प्रकार की समस्यायें खड़ी हो गयीं। हे फरीद! अब यही पछतावा है कि फिर से कुमारी नहीं हो सकती।

कलर केरी छपड़ी आइ उलथो हंझ।
चिंजू बोड़नि न पीवहि उडण संदी डंझ ॥64॥

कल्लर (बंजर) भूमि के छप्पर (जोहड़, गंदी तलैया) में हंस आ उतरे हैं।

वे न तो इसमें अपनी चोंच डुबाते है और न जल पीते हैं। बल्कि (वहाँ से) उड़ जाने की कामना करते हैं।

(संत—इस संसार में आकर इसके मोह में नहीं फंसते, वरन् उससे मुक्त रहकर यहाँ से चले जाना चाहते हैं)

हंसु उडरि कोध्रै पइआ, लोक विडारणि जाइ।
गहला लोकु न जाणदा हंस न कोध्रा खाइ ॥65॥

हंस उड़ कर कोदों (सांवा की जाति का एक मोटा अन्न) के खेत पर उतर आया। लोग उसे उड़ाने के लिए जाते हैं।

मूर्ख लोग यह नहीं जानते कि हंस कोदों नहीं खाता।

चलि चलि गइआं पंखीआं जिनी वसाए तल।
फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥66॥

जिन्होंने अनेक स्थान (नगर, देश) बसाये थे, वे भी पक्षियों की भांति इस

संसार-रूपी सरोवर से उड़ गये (चल बसे)।

हे फरीद ! एक दिन यह भरा हुआ संसार-सरोवर भी नष्ट हो जायेगा। केवल संत रूपी कमल ही शेष रह जायेंगे। (अर्थात यह संसार नश्वर है, लेकिन संसार कमलवत निर्लिप्त भाव से रहने वाले संत अमर होते हैं);

फरीदा इट सिराणे, भुइ सवणु कीड़ा लड़िओ मासि ॥
केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥67

हे फरीद ! सिर के नीचे ईंट रखकर जमीन पर सोते हुए (कब्र में) शरीर के मांस को कीड़े खाते रहते हैं। इस प्रकार एक ही करवट पड़े-पड़े कई युग बीत गये।

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी, तुटी नागर लजु ॥
अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥68॥

हे फरीद ! (शरीर रूपी) सुन्दर घड़ा टूट गया है और आयु रूपी लंबी लज्जु (रस्सी) भी टूट गई है। पता नहीं मृत्यु का फरिश्ता इज़राईल आज किस घर जाकर अतिथि बनेगा।

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी, टूटी नागर लजु।
जो सजणु भूइ भार थे से किउ आवहि अजु ॥69॥

हे फरीद, शरीर रूपी सुन्दर घड़ा टूट गया है और आयु रूपी लंबी लज्जुर भी टूट गई है।

जो मनुष्य (परमात्मा से विमुखता एवं पाप कर्मों के कारण) इन पृथ्वी पर भार स्वरूप थे, वे इस दुनिया में किस मुंह से आएंगे।

फरीदा बेनिवाजा कुतिआ एह न भली रीति।
कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥70॥

हे फरीद ! नमाज़ न पढ़ने वाला कुत्ते के समान है। यह अच्छी बात नहीं है। तू कभी भी मस्जिद में पांच समय नमाज़ पढ़ने के लिए नहीं आया।

उठ फरीदा उज़ू साजि सुबह निवाज गुजारि।
जो सिरु साई ना निवै सा सिरु कपि उतरि ॥71॥

हे फरीद, उठ ! वुजू कर और प्रातःकाल की नमाज़ पढ़।

जो सिर परमात्मा के सिजदे (बंदगी) में नहीं झुकता, उस सिर को काट कर फेंक देना चाहिए।

जो सिरु साईं ना निवै सो सिरु कीजै काइ।
कुंने हेठि जलाइऐ बालण संदै थाइ ॥72॥

जो सिर साईं के सिजदे में नहीं झुकता, उस सिर का क्या करना चाहिए।

उसे चूल्हे में लकड़ियों के स्थान पर जला देना चाहिए।

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिनी तू जणिउहि ॥
तै पासहु उइ लदि गए तू अजै न पतीणोहि ॥73॥

हे फरीद ! जिन्होंने तुझे जन्म दिया था, तेरे वे माता-पिता कहां हैं। जब वे तेरे पास से चले गये, तो भी तुझे (इस संसार की नश्वरता का) विश्वास नहीं होता।

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि।
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी माहि ॥74॥

हे फरीद ! तू अपने मन रूपी मैदान से गढ़ों एवं टीलों को साफ करके इसे समतल कर ले। अर्थात अहंकार, मोह, मत्सर आदि को मिटा कर मन को शुद्ध कर ले।

इस प्रकार करने से आगे तुझे दोज़क (नरक) की अग्नि में बिल्कुल भी जलना नहीं पड़ेगा।

महला 5 ॥ फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि।
मंदा किस नों आखीऐ, जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥75॥

हे फरीद ! परमात्मा संसार में (समाया हुआ है) और यह संसार परमात्मा में समाया हुआ है।

जब कोई भी परमात्मा से रहित नहीं है, तब बुरा किसको कहें। (सभी के अन्तर में परमात्मा का निवास है),

फरीदा जि दिहु नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख।
पवनि न इतीं मामले सहां न इती दुख ॥76॥

हे फरीद ! जिस दिन (मेरे जन्म के समय), (दाई ने) मेरी नाल (ऑवल नाड़ी) काटी थी, यदि वह उसके स्थान पर ज़रा (तनिक) मेरा गला काट देती, तो मुझे इतने दुख न सहने पड़ते और न ही इतनी समस्याओं का सामना करना पड़ता।

चबण चलण रतंन से सुणी अर बहि गए।
हेड़े मुती धाह से जानी चलि गए ॥77॥

जब चबाने वाले (दाँत), चलने वाले (चरण), नेत्र तथा श्रवण करने वाले (कान) नष्ट हो गये (अर्थात शरीर की सभी इन्द्रियां क्षीण एवं शिथिल हो गई तो शरीर (जरावस्था को प्राप्त करने पर) रुदन (पछतावे में) करता है कि मेरे प्रिय चले गये हैं और (अब मेरा अन्त भी समीप है)।

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनिना हढाइ।
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥78॥

हे फरीद! जो तेरा बुरा (अहित) करते है, तुझे उनका भी भला (हित) करना चाहिए और कभी भी मन में क्रोध नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार का आचरण करने से, तेरे शरीर को कोई रोग नहीं लगेगा और तुझे सब कुछ प्राप्त होगा।

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु।
नउबति वजी सुबहसिउ चलण का करिसाजु ॥79॥

हे फरीद! यह संसार एक सुन्दर उपवन के समान है और मनुष्य पक्षी की भाँति (यहाँ) अतिथि हैं।

प्रातःकाल से नौबत बाजा बज रहा है, जो यह सन्देश दे रहा है कि हे मनुष्य अब इस संसार से चलने की तैयारी कर।

(अर्थात यह सुन्दर प्रतीत होने वाला क्षणभंगुर एवं नाशवान है)

फरीदा राति किथूरी वंडीऐ, सुतिआ मिलै न भाउ ॥
जिन्हां नैण नीद रावले तिनां मिलण कुआउ ॥80॥

हे फरीद! रात्रि के समय (हरि नाम की) कस्तूरी बांटी जाती है, किन्तु जो व्यक्ति सोते होते हैं, उन्हें वह (परमात्मा का प्रेम) प्राप्त नहीं होती।

जिनके नेत्र नींद से भरे हुए होते हैं, उसका परमात्मा से मिलन अत्यन्त कठिन है।

फरीदा मैं जानिआ दुखु मुझकू दुखु सवाइऐ जग।
ऊचे चढ़ि कै देखिआ, तां घरि-घरि सहा अग ॥81॥

हे फरीद! मैं तो समझता था कि यह दुख मुझे ही है किन्तु नहीं, यह दुख तो सारे संसार को है।

जब मैंने ऊपर चढ़कर देखा तो मालूम हुआ कि घर-घर में यही आग लगी हुई है।

(यह संसार दुखों का घर है)

महला 5 ॥ फरीदा भूमि रंगावली, मंझि विसूला बाग।
जो जन पीर निवाजिआं, तिन्हा अंच न लाग ॥82॥

हे फरीद ! यह पृथ्वी अनेक रंगों से रंगी हुई (अत्यन्त सुन्दर) है। इसके मध्य में दुखों का उपवन है।

जिन लोगों के ऊपर गुरु की कृपा है, उन्हें (उन दुखों की अग्नि की) आंच नहीं लगती।

महला 5 ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी, संगि सुवंनड़ी देह।
विरलै केई पाईअनि जिना पिआरे नेह ॥83॥

हे फरीद ! आयु बहुत सुन्दर है, साथ ही सुन्दर शरीर मिला हुआ है।

किन्तु ऐसे बहुत कम लोग मिलेंगे जिनका प्रियतम (परमात्मा) के साथ प्रेम है।

कंधी वहण न ढाहि, तउ भी लेखा देवणा ॥
जिधर रब रजाइ, वहणु तिदाऊ गउ करे ॥84॥

हे नदी ! तू अपने तीव्र प्रवाह से अपने तटों को मत गिरा। (क्योंकि) तुझे लेखा—हिसाब देना होगा। (अर्थात प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है, इसलिए किसी को कष्ट नहीं देना चाहिए)

जिस ओर परमात्मा की इच्छा होगी, तेरा प्रवाह भी उसी ओर कर देगा। (अर्थात प्रत्येक शक्तिशाली व्यक्ति भी परमात्मा की इच्छा के वशीभूत है)

फरीदा दुखा सेती दिहु गइआं सूलां सेती रात।
खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥85॥

हे फरीद ! दिन भी दुखों में कट गया, और रात भी कष्टों में बीत गई।

केवट (गुरु) खड़ा पुकार रहा है कि हे मनुष्य ! तेरी जीवन-नौका सांसारिक मोह-माया एवं दुखों के भँवर में फंस गई है। (तुझे सचेत होकर परमात्मा का स्मरण करना चाहिए)॥

लंमी-लंमी नदी वहै कंधी केरै हेति।
बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥86॥

नदी दूर तक(लम्बी-लम्बी) बहती जा रही है और तटों को तोड़ती जा रही है।

यदि नाविक सचेत हो तो भवंर नौका का क्या बिगाड़ सकते हैं।

फरीदा गली सु सजण वीह, इकु ढूंढेदी ना लहां।
धुखां जिउ मालींह, कारणि तिन्हां मा पिरी ॥87॥

हे फरीद! बातें बनाने वाले (सहानुभूति प्रदर्शित करने वाले) तो बीसियों (अनेक) सज्जन मिल जाते हैं, किन्तु सच्चा मित्र ढूंढ़ने पर एक भी नहीं मिलता।

मैं अपने उस प्रियतम के लिए (परमात्मा के विरह में) गीले उपले की भांति धूक (इस प्रकार जलना कि लौ बाहर न निकले) रही हूं।

फरीदा इहु तनु भउकुणा नितनित दुखीऐ कउणु।
कंनी वुजे दे रहां किती वगै पउणु ॥88॥

हे फरीद! यह शरीर (वासनाओं के वशीभूत होकर) कुत्ते की भांति भौंकता रहता है। इसलिये इसके भौंकने से नित्यप्रति कौन दुखी हो।

मैं अपने कानों में कपड़े ठूंसे रखता हूं, चाहे फिर कितनी-ही आवाज़ें क्यों न आती रहें। (अर्थात मैं उन वासनाओं की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता।

फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंनि।
जो जो वंञै डीहणा सो उमर हथ पवंनि ॥89॥

हे फरीद! परमात्मा (का नाम) पकी हुई खजूरों जैसा मधुर है; अथवा मधु (शहद) का बहता हुआ दरियाव (नदी) है।

जो-जो दिन बीत जाता है, उतनी ही आयु घटती जाती है। (इसलिए एक भी क्षण खोये बिना उस मधुर प्रियतम का स्मरण करते रहना चाहिए)

फरीदा तनु सुका, पिंजरु थीआ, तलीआं खूंडहि काग।
अजै सु रब न बाहुडिओ देखु बंदे के भाग ॥90॥

हे फरीद! उस प्रियतम (परमात्मा) की प्रतीक्षा करते-करते, विरह में शरीर सूख कर पिंजर हो गया है। तलवों को कौवे चोंचे मार-मार कर कुरेद रहे हैं।

वह प्रियतम अभी तक भी नहीं आया (परमात्मा के अभी तक भी दर्शन नहीं हुए)। मनुष्य के दुर्भाग्य को देख।

कागा करंग ढढोलिआ सगला खाइआ मासु ।
ए दुइ नैना मतिछुहउ पिय देखन की आस ॥91॥

हे काग ! तूने मेरा सारा पिंजर खोज (कुरेद) लिया और शरीर का सारा मांस भी खा लिया है ।

मेरे ये दो नेत्र मत छू, क्योंकि मुझे प्रिय के दर्शनों की बड़ी अभिलाषा है।

कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥92॥

हे काग ! तू मेरे शरीर के पिंजर को मत कुरेद। यदि तू इसमें निवास करता है, तो भी उड़ जा ।

जिस पिंजर में मेरा प्रियतम (परमात्मा) निवास करता है, उसका मांस मत खा ।

फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघारिआ घरि आउ ।
सरपर मैथै आवणा मरणहु न डरिआहु ॥93॥

हे फरीद ! बिचारी कब्र बुला रही है कि हे बेघर (घर-बार रहित) मनुष्य तू अपने वास्तविक घर (कब्र) में आ जा। अन्त में तुम्हें मेरे पास ही आना है। मरने से मत डर ।

एनी लोइण देखदिआ केती चलि गई ।
फरीदा लोकां आपो आपणी मैं आपणी पई ॥94॥

इन आंखों के देखते-देखते कितने ही मर गये ।

बाबा फरीद कहते हैं कि लोगों को अपनी-अपनी पड़ी हुई है (सांसारिक-सुखों की पूर्ति की इच्छा है)। और मुझे अपनी (प्रभु को प्रेम करने की) पड़ी हुई है।

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होए ॥
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि समु जगु तेरा होइ ॥95॥

यदि तू अपने आपको सुधार ले तो तू मुझे (परमात्मा) पा सकता है और मुझे पा लेने से तू सुखी होगा ।

हे फरीद ! यदि तू मेरा (परमात्मा का) हो जाय, तो यह सारा संसार तेरा हो जायेगा ।

कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीर ।
फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरू ताई नीरू ॥96॥

नदी के तट का वृक्ष कितनी देर तक खड़ा रह सकता है ।

हे फरीद ! मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी कब तक ठहर सकता है ।

(इसी प्रकार यह मनुष्य-शरीर भी अस्थायी एवं नाशवान है)

फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥
गोरां सो निमाणीआ बहसनि रुहां मलि ।
आखां सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥97॥

हे फरीद ! (बड़े-बड़े) महल खाली हो गये । (और मृत्यु के पश्चात), उनमें रहने वालों को भी ज़मीन के नीचे आकर बसना पड़ा ।

विचारी कब्रें उनकी आत्माओं को पकड़ कर बैठ जाती है ।

हे शेख ! तू भी बंदगी कर ले । आज या कल मे तुझे भी मर जाना है ।

फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥
आगै दोजक तपिआ सुणीऐ हूल पवै कहाहा ॥
इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥
अमल जि कितिआ दुनि विचि से दरगाह उगाहा ॥98॥

हे फरीद ! मृत्यु का बाँध इस प्रकार दिखाई पड़ता है जैसे नदी का कटा हुआ किनारा हो । सुना जाता है कि

आगे दोज़ख (नरक) की आग जल रही है । कोलाहल और हाहाकार मचा हुआ है ।

कुछ को तो सुध (समझ) आ गई है, और कुछ लापरवाही से घूम रहे हैं ।

हे मनुष्य ! जो कर्म इस दुनिया में किये जायेंगे, वे ही दरगाह में गवाह बनेंगे ।

फरीदा दरीआवै कंनै बगुला बैठा केल करे ॥
केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥
बाज पए तिसु रब दे केलां विसरीआं ॥
जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥99॥

हे फरीद ! नदी के किनारे बैठा हुआ बगुला केलि (क्रीड़ा) कर रहा था। केलि करते हुए हंस पर अचानक ही बाज़ (पक्षी) पड़ गये। जब परमात्मा के भेजे हुए बाज़ (यमदूत) टूट पड़ते हैं तो सभी प्रकार की केलि-क्रीड़ायें भूल जाती है।

जो बातें कभी चित्त में भी नहीं आती थीं, परमात्मा वे कर दिखाता है।

साडे त्रै मण देहुरी चले पाणी अंनि ॥
आइऊ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंनि ॥
मलकलमउत जां आवसी सम दरवाजे भंनि ॥
तिनां पिआआ भाईआं अगै दिता बंनि ॥
वेखहु बंदा चलि जा चहु जणिआ दै कंनि ॥
फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगहि आए कंमि ॥100॥

साढ़ तीन मन का यह शरीर अन्न और जल के सहारे चल रहा है। मनुष्य (अपनी ओर से तो) दुनिया में स्थायी नींव रखकर आता है लेकिन जब मलकुलमौत (यमराज) सभी द्वार तोड़ कर आ पहुंचता है तो अपने प्रिय भाई-सगे-सम्बन्धी ही (मनुष्य को) बांध कर उसके आगे कर देते हैं।

देखो उस समय मनुष्य चार आदमियों के कंधों पर चढ़ कर चल पड़ता है।

हे फरीद ! दुनिया में किये हुए कर्म ही दरगाह में काम आयेंगे।

फरीदा हउ बलिहारी तिन् पंखीआ जंगलि जिन्ा वासु।
ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोड़नि पास ॥101॥

मैं उन पक्षियों पर कुर्बान हूं जो जंगल में रहते हैं, कंकरों को चुगते हैं। पृथ्वी पर रहते हैं, पर भगवान का साथ नहीं छोड़ते। बाबा फरीद कहते हैं कि मैं उन फकीरों पर कुर्बान हूं जो दुनिया को छोड़कर जंगल में रहते हैं। जंगल के कंकर या दाने चुगकर जो अपना पेट भरते हैं। जमीन पर लेट कर जो भगवान् की बंदगी करते रहते हैं।

फरीदा रुति फिरी, वणु कंबिआ, पत झड़े झड़ि पाहि ॥
चारै कुंडा ढूंढीआं रहणु किथांऊ नाहि ॥102॥

ऐ फरीद ! मौसम बदल गया हैं। जंगल कांपने लगा है। वृक्ष से पत्ते गिर रहे हैं। मैंने दुनिया के चारों तरफ घूमकर देख लिया है, कहीं भी रहने का ठिकाना नहीं। बाबा फरीद कहते हैं कि अब बुढ़ापा आ गया है। शरीर कांपने लग गया हैं और शरीर के अंग कमजोर होते जा रहे हैं। मैं सारी दुनिया देख चुका हूं, पर ऐसा कोई स्थान नहीं जहां मौत से बचा जा सके।

फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कंब लड़ी पहिरेउ ॥
जिनी वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥103॥

बाबा फरीद कहते हैं कि मैं कपड़े फाड़कर लीर-लीर कर दूं और गुदड़ी पाकर फकीर बन जाऊं। क्योंकि मैं वही वस्त्र अथवा वेशभूषा धारण करने को तैयार हूं जिससे परमात्मा की प्राप्ति हो जाए।

म०: 3 ॥ काइ पटोला पाड़ती कंब लड़ी पहिरेइ ॥
नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥104॥

बाबा फरीद के उपर्युक्त श्लोक के उत्तर में गुरु बाबा अमरदास जी कहते हैं कि कपड़े फाड़ने की और गुदड़ी पहनने की कोई आवश्यकता नहीं। नानक ! परमात्मा घर बैठे ही मिल सकता है अगर मनुष्य की नीयत साफ़ हो।

म०: 5 ॥ फरीदा गरबु जिना वडि आईआ धन जोबनि आगाह ॥
खाली चलै धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥105॥

गुरु जी की टिप्पणी है कि ऐ फरीद ! जिनको अपने रूप और जवानी पर अभिमान होता है वे लोग परमात्मा से वंचित रहते हैं। उनको उसी प्रकार परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती जिस प्रकार ऊंचे स्थानों पर वर्षा का पानी नहीं ठहरता।

फरीदा तिना मुखडरावणे जिना विसारिओ न नाउ ॥
ऐथे दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥106॥

फरीद का कथन है कि उनकी शक्ल ही भयंकर होती है, जिन्होंने परमात्मा का नाम भुला दिया है। उनको दुनिया में रहते हुए भी बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं और परमात्मा की दरगाह में भी उसको कोई स्थान नहीं मिलता।

फरीदा पिछलि राति न जागिओहि जीवदड़ो मोइओहि ॥
जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥107॥

बाबा फरीद कहते हैं, कि हे मनुष्य, जो तू पिछली रात अर्थात् अमृत के समय नहीं जागता, तो तू जीवित भी मरे हुए के समान है। अगर तूने परमात्मा को भुला दिया है तो इसका यह अर्थ नहीं कि परमात्मा ने भी तुझे भुला दिया है। परमात्मा की नज़रों में तेरा अस्तित्त्व है।

म: 5 ॥ फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताज ॥
अलह सेती रतिआ एहु सचावा साजु ॥107॥

हे फरीद, परमात्मा बड़ा रंगीला है। वह कई प्रकार का खेल खेलता है। वह

किसी पर भी आश्रित नहीं। परमात्मा के साथ प्यार करने से ही घर-बाहर की रौनक होती है। अर्थात् परमात्मा के प्यार के बिना सभी कुछ झूठ है।

म: 5 ॥ फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते लाहि विकारु।।
अलह भावै सो भला तां लभी दरबारु ॥109॥

गुरु साहिब कहते हैं कि हे फरीद ! सुख और दुख को बराबर समझ और मन से सभी बुरे ख्यालों को निकाल दे। परमात्मा को जो अच्छा लगता है अगर वही तुम्हें अच्छा लगे तो परमात्मा के दरबार की प्राप्ति होती है।

म: 5 ॥ फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥
सोइ नीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥110॥

ऐ फरीद ! दुनिया को जिस तरफ लगाओ उसी तरफ लग जाती है और तू भी दुनिया के साथ लग जाता है। पर वह दिल दुनिया के पीछे नहीं भागता जिसकी रखवाली परमात्मा स्वयं करते है अर्थात् परमात्मा को याद रखने वाले मनुष्य दुनियादारी में स्वयं को नहीं डालते।

म: 5 ॥ फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कमि ॥
मिसल फकीरां गाखड़ी सु पाईऐ पूरि करंमि ॥111॥

ऐ फरीद, दिल तो दुनिया के प्यार में फंसा हुआ है, पर यह संसार किसी काम नहीं आता। फकीरों की मिसाल बड़ी कठिन है। अच्छे कर्मों के करने से ही फकीरों वाला मार्ग मिलता है।

पहिले पहिरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥
जो जागंनि लहंनि से साई कंनो दाति ॥112॥

रात के पहले पहर में फूल लगते हैं, और पिछली रात फल भी लग जाते हैं। जो रात-भर जागते रहते हैं, वे परमात्मा से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। अर्थात् रात के पहले पहर में बंदगी करने से मन बुराइयों से हटकर टिक जाता है और जो प्रात: तक बंदगी करते रहे तो नाम रूपी फल की प्राप्ति भी हो जाती है।

दाती साहिब संदीआ किया चलै तिसु नालि ॥
इकि जागंदे ना लहनि इकना सुतिया देइ उठालि ॥113॥

यह श्लोक गुरु नानक द्वारा रचित है जिसमें श्लोक संख्या 112 के भाव को स्पष्ट किया गया है। सभी पदार्थ उस दाता परमात्मा के हैं। व्यक्ति ऐसे हैं जो सारी-सारी रात जागते हैं उन्हें तब भी परमात्मा के

नाम की उपलब्धि नहीं होती और कई आराम से सोते हैं तो भी उन्हें परमात्मा के नाम की प्राप्ति हो जाती है। इसीलिए परमात्मा से हर समय प्रार्थना ही करते रहना चाहिए। न मालूम वह कब अपनी कृपा दृष्टि कर दे।

ढूढे दीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥
जिना नाउ सुहागणि तिना झाक न होर ॥114॥

सुहाग अथवा अपने पति की खोज करने वाली स्त्री, स्वयं तेरे में ही कोई कमी है। क्योंकि जो स्त्रियां सुहागिनी हैं वे और किसी भी तरफ नहीं देखती। ओ परमात्मा की खोज करने वाले मनुष्य स्वयं तुझ में ही कोई पाप छिपा हुआ है, जो तुझे परमात्मा नहीं मिलता। जो परमात्मा को चाहने वाले व्यक्ति होते हैं वे अन्य किसी भी वस्तु के लिए संसार में कामना नहीं करते।

सबर मंझ कमाण ए, सबरु का नीहणी ॥
सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥115॥

मेरे दिल की कमान सन्तोष है और सन्तोष का ही निशाना है। सन्तोष का ही मेरे पास तीर है जो कि परमात्मा कभी भी चूकने नहीं देता।

सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेनि ॥
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥116॥

सन्तोष करने वाले सन्तोष के लिए ही अपना सारा जीवन जला देते हैं। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति परमात्मा के पास पहुंच जाते हैं और वे अपने दिल का भेद किसी को बताते भी नहीं।

सबरु एहु सुआउ, जे तूं बंदा दिजु करहि ॥
वधि थीवहि दरिआउ, टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥117॥

हे मनुष्य, जो तू संतोष को अपने मन में अच्छी प्रकार बसा लेगा तो तुझे ही लाभ होगा कि तू परमात्मा के नजदीक पहुंच जाएगा। इस प्रकार सन्तोष का तू सागर बन जा, सन्तोष को छोड़कर अपना अस्तित्त्व एक बहते हुए छोटे नाले की भांति मत बना लेना।

फरीदा दरवेसी गाखडी चोपड़ी परीति ॥
इकनि किनै चालीऐ दरवे सावी रीति ॥118॥

बाबा फरीद कहते हैं कि फकीरी की प्राप्ति बहुत ही कठिन है। जो साधारण फकीर होते हैं उनकी फकीरी केवल दिखावे के लिए होती है। वास्तव में एक भी

फकीर ऐसा नहीं जो हर तरीके से एक फकीर की ही भांति रहता हो।

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंनि ॥
पैरी थकां सिरि जुलां जे भूं पिरी मिलंनि ॥119॥

परमात्मा के बिना वियोग में मेरा शरीर भट्टी की भांति जलता हैं और हड्डियां लकड़ियों की भांति जलती हैं। अगर मुझे मेरा परमात्मा मिल जाए तो उसको प्राप्त करने के लिए मैं पैरों से चलते-चलते थक जाने के पश्चात् सिर के बल चलने के लिए तैयार हूं।

तनु न तपाइ तनूर जिउ, बालणु हड न बालि ॥
सिरि पैरी किआ फेड़िआ, अंदरि पिरि निहालि ॥120॥

बाबा फरीद कहते हैं कि तू अपने शरीर को भट्ठी की भांति मत जला और न ही हड्डियों को लकड़ियों की तरह जला। तेरे सिर और पैरों ने तेरा क्या बिगाड़ा है, तू अपने प्यारे परमात्मा को अपने अन्दर ही देख।

हउ ढूढेदी सजणा सजणू मैडे नालि ॥
नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥121॥

सतगुरु जी कहते हैं कि मैं तो अपने परमात्मा को खोजती फिरती हूं। मेरा प्यार मेरे साथ ही है। परमात्मा को कोई भी नहीं जान सकता। कोई परमात्मा का व्यक्ति ही उसे दिखा सकता है।

हंसा देखि तरंदिआ बगां भि आइआ चाउ ॥
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥122॥

हंसों को तैरता देख बगुलों को भी तैरने का चाव होता है, परन्तु बगुले डूब कर मर जाते हैं क्योंकि उनका सिर नीचे और पैर ऊपर हो जाते हैं। अर्थात् अच्छे व्यक्तियों या सच्चे फकीरों को देख पाखण्डियों का भी पार लगने का चाव होता है, परन्तु वे विनाश को प्राप्त होते हैं। भगवान् के द्वारा वे भी बगुलों की तरह उलटे कर दिए जाते हैं।

मै जाणिआ वड हंसु है तां मैं कीता संगु ॥
जे जाणा बग बपुड़ा, जनमि न भेड़ी अंगु ॥123॥

बाबा फरीद कहते हैं कि मैं किसी फकीर को सच्चा फकीर समझकर हमेशा उसके साथ रहता रहा। जो मुझे पता होता कि वह पाखण्डी है तो मैं उसके साथ मोहब्बत न करता अर्थात् उसका साथ न करता।

किआ हंसु किआ बगुला जाकउ नदरि धरे ।।
जे तिसु भावै नानका कागहु हंसू करे ।।124।।

गुरुजी कहते हैं कि चाहे कोई हंस हो या बगला, जो परमात्मा को मंजूर हो तो वह कौए से भी हंस बना देता है। गुरु नानक देव जी कहते हैं चाहे कोई सच्चा फकीर बंदगी करने वाला हो या दिखावा करने वाला पाखण्डी हो, अगर परमात्मा को मंजूर हो तो वह बड़े से बड़े पापी को भी सच्ची बंदगी करने वाला फकीर बना सकता है।

सखर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास ।।
इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ।।125।।

बाबा फरीद कहते हैं कि इस संसार रूपी तालाब में मेरा मन एक पक्षी की भांति है जिसको फंसाने वाले पचास हैं अथवा इस दिल को कइयों ने जकड़ा हुआ है। ये दिल अब दुनिया की इच्छाओं से घिर गया है। इसलिए हे परमात्मा, अब तू ही मालिक हैं।

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ।।
कवणु सु वेसो हउ करी, जिउ वसि आवै कंतु ।।126।।

बाबा फरीद गुरु अमरदास से कहते हैं कि वह कौन-सा अक्षर है, वह कौन-सा गुण और वह कौन-सा कीमती मन्त्र हैं, और मैं कौन-सा वेश अथवा कौन-सी वेशभूषा धारण करूं, जिससे मेरा मालिक अर्थात् परमात्मा मेरे वश में हो जाए।

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ।।
ए त्रै भैणे वेस करि ता वसि आवी कंतु ।।127।।

उपर्युक्त श्लोक का गुरु जी उत्तर देते हुए कहते हैं कि वह अक्षर नम्रता का है, वह गुण माफी मांगने का है, और वह कीमती यन्त्र जबान में मिठास लाने का है। अगर तू इन तीनों बातों को अपना लेता है तो परमात्मा स्वयं ही तेरे वश में हो जाएगा।

मति होदी होइ इआणा ।। ताण होदे होइ निताणा ।।
अण होदे आपु वंडाए ।। कोई ऐसा भगतु सदाए ।।128।।

जो कोई स्वयं बुद्धिमान होते हुए भी दूसरों को बुद्धिमान समझे, शक्तिशाली होते हुए भी स्वयं को कमज़ोर समझे और जो स्वयं को लोगों की सेवा में लगा दे, वह भक्त अथवा बंदगी करने वाला कहला सकता है।

इकु फिका नागा लइ सुभना मै सचा धणी ।।
हिआउ न कैही ठाहि माणक सम अमोलवो ।।129।।

मुंह से कोई बुरा शब्द मत निकाल क्योंकि सभी में सच्चा परमात्मा निवास करता है। किसी का दिल भी मत तोड़ क्योंकि सभी का दिल मूल्यवान है।

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ।।
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ।।130।।

बाबा फरीद कहते हैं कि सभी के दिल कीमती मोतियों के समान हैं। इनको तोड़ना ठीक नहीं। जो तुम्हें परमात्मा के मिलन की चाह अथवा इच्छा है तो किसी का दिल मत तोड़ना अथवा किसी को कड़वा अथवा बुरा शब्द मत कहना।

आसा सेख फरीद जीऊ
1 ओं सतिगुर प्रसादि ।।
दिलहु मुहबति जिन सेई सचिआ ।।
जिन मनि होरु मुखि होरु से कांढे कचिआ ।।1।।
रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ।।
विसरिआ जिन नामु ते भोइ भारु थीए ।।
रहाऊ ।।
आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ।।
तिन धंनु जणेदी माऊ आए सफलु से ।।
परवरदिगार अपार अगम बेअंत तूं ।।
जिना पछाता सचु चुंमां पैर मूं ।।
तेरी पनह खुदाइ तूं बखसंदगी ।।
सेख फरीदै खैर दीजै बंदगी ।।

शेख फरीद कहते हैं कि जिनके हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम है, वे ही सच्चे हैं। जिनके मन में कुछ और है तथा मुख में कुछ और है, वे झूठे (कच्चे) हैं अर्थात् मनमुख हैं। जो प्रभु-प्रेम में रंगे हुए हैं, वे ईश्वर-दर्शन के रंग में मस्त रहते हैं। जिन्होंने प्रभु का नाम विस्मृत कर दिया है, वे धरती पर बोझ बने हुए हैं।

जो व्यक्ति प्रभु-नाम में रंगे हुए हैं, उन्हें प्रभु ने अपने गले से लगा लिया है और वे प्रभु-द्वार के भिखारी बने हुए हैं। ऐसे लोगों को जन्म देने वाली मां धन्य है और उनका संसार में आना सफल है। हे पालनकर्ता ! तू बेअंत है और पहुंच से परे है। जिन्होंने सत्य अथवा वाहेगुरु को पहचान लिया हैं, मैं उनके चरण चूम लूं। हे प्रभु ! तेरा आसरा है, तुम क्षमाशील हो, तुम शेख फरीद को अपनी बंदगी

का दान दो।

आसा ॥

वोलै सेख फरीद पिआरे अलह लगे ॥
इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥
आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचि दंड़ीआ ॥ रहाऊ ॥
जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ॥
झूठी दुनीआ लगी न आपु वईऐ ॥
बोलीऐ सचु धरमु झूठु न वोलीऐ ॥
जो गुर दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥
चैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥
कंचन वंने पासे कलवति चीरिआ ॥
सेख हयाती जगि न कोई थिए रहिआ ॥
जिसु आसणि हम बैठे केते बैस गइआ ॥
कतिक कूंजां चेति ढ़ऊ सावणि विजुलीआं ॥
सीआले सोहंदीआं पिर गलि बाहड़ीआं ॥
चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥
गंढ़ेदिआं छिअ माह तुड़ंदिआं हिकु खिनो ॥
जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किनि गए ॥
जालण गोरा नालि, ऊलामे जीअ सहे ॥

फरीद का कथन है कि मनुष्य को परमात्मा से प्रेम करना चाहिए। वह शरीर तो खाक (धूल) बन जाएगा और बेचारी कब्र में पड़ा रहेगा। परमात्मा से मिलना तभी सम्भव है जब मन में उत्पन्न होने वाली इच्छाओं-ऐषणाओं पर नियंत्रण रखा जाए। जीव को यह अहसास होना चाहिए कि मनुष्य को एक दिन अवश्य मर जाना हैं और पुनः इस संसार में नहीं आना है। उसे संसार को मिथ्या जानकर इसमें लिप्त नहीं होना चाहिए। मनुष्य को सदैव सत्य बोलना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए। शिष्यों को गुरु के बताए मार्ग पर ही चलना चाहिए। सुन्दर नवयुवक (गुरु) तो संसार सागर को पार कर रहे हैं लेकिन युवतियां (आत्मा) मन में धैर्य धारण किए हुए हैं। उनके स्वर्ण जैसे अंग बरछी से चीरे जा रहे हैं। फरीद का कहना है कि इस जगत में कोई भी जीव स्थिर नहीं रहा, जिस आसन पर हम बैठे हैं, उस पर हमसे पहले कितने ही लोग बैठकर चले गए हैं। कार्तिक मास में सुन्दर कूजां पक्षी चहचहाते हैं, चैत्र मास में ग्रीष्म का आरम्भ हो जाता है और सावन के महीने में बिजली चमकने लगती हैं। शीत ऋतु में सुन्दर स्त्रियां अपने प्रिय के गलें में बाँहें डालकर आनन्द लेती हैं, लेकिन

अन्ततः सभी इस संसार से चलते बनते हैं। हे मन ! यह अच्छी तरह विचार ले। किसी वस्तु को जोड़ने में तो छः महीने लगते हैं, लेकिन तोड़ने में एक क्षण भी नहीं लगता। फरीद कहते हैं—पृथ्वी आकाश से पूछती है कि केवट (शरीर) कहां चला गया है। वे कहते हैं कि शरीर तो कब्र में पड़ा रहता है और आत्मा को उपालम्भ, बुरा-भला सहना पड़ता है।